

भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 152]

No. 152]

नई दिल्ली, बुधस्वतिवार, जुलाई 15, 2004/आषाढ़ 24, 1926
NEW DELHI, THURSDAY, JULY 15, 2004/ASADHA 24, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 15 जुलाई, 2004

अन्तिम जांच परिणाम

विषय: चीन जनवादी गणराज्य मूल के अथवा वहां से निर्यातित क्लोरोक्वीन फास्फेट के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच।
सं. 14/3/2003-डीजीएडी.—

सं0 14/3/2003-डीजीएडी- 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली 1995 को ध्यान में रखते हुए :

क. प्रक्रिया

1. जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है : .
- i. निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग की ओर से मै0 इपका लैबोरेट्रीज लि0, मुंबई एवं मै0 मंगलम ड्रग्स एंड आर्गेनिक्स लि0, मुम्बई से एक याचिका प्राप्त हुई है जिसमें चीन जनवादी गणराज्य (जिसे आगे संबद्ध देश कहा गया है) मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए क्लोरोक्वीन फास्फेट के पाटन का आरोप लगाया गया है।
- ii. याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत आवेदन की प्रारंभिक जांच में कतिपय कमियां प्रकट हुई थी जिन्हें बाद में याचिकाकर्ता द्वारा ठीक कर दिया गया था। अतः याचिका को विधिवत प्रलेखित माना गया था।
- iii. प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रथम दृष्ट्या साक्ष्य के आधार पर चीन जनवादी गणराज्य से संबद्ध वस्तु के आयातों के खिलाफ जांच शुरू करने का निर्णय लिया। प्राधिकारी ने उक्त नियमों के उप-नियम 5(5) के अनुसार जांच की कार्रवाई शुरू करने से पहले पाटन के आरोप की प्राप्ति के विषय में नई दिल्ली में चीन जनवादी गणराज्य के दूतावास को सूचित किया।

- iv. प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति ज्ञात निर्यातकों (जिसका ब्योरा याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध करवाया गया था) और उद्योग/प्रयोक्ता एसोसिएशनों को भेजी और नियम 6(2), 6(3) एवं 6(4) के अनुसार उन्हें लिखित रूप में अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया। प्राधिकारी ने अपेक्षित उत्तर के लिए गैर-बाजार अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित प्रश्नावली की एक प्रति भी निर्यातकों को भेजी।
- v. प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार सभी हितबद्ध पार्टियों को अनुरोध करने पर निरीक्षण के लिए वह सार्वजनिक फाइल उपलब्ध कराई जिसमें विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किये गए सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंश निहित थे। टिप्पणियां प्रस्तुत करने के लिए हितबद्ध पार्टियों से अतिरिक्त सूचना के बारे में कुछ हितबद्ध पार्टियों के अनुरोध करने पर नियमानुसार व्यवहार्य और अनुमत्य सीमा तक उक्त सूचना भी उपलब्ध कराई गई।
- vi. केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी- से अनुरोध किया गया कि वह जांच की अवधि सहित पिछले 3 वर्षों के दौरान भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरों की व्यवस्था करें।
- vii. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन जनवादी गणराज्य मूल्य के अथवा वहाँ से निर्यातित क्लोरोक्वीन फास्फेट के आयात से सम्बन्धित पाटनरोधी जांच के सम्बन्ध में प्रारम्भिक जांच परिणामों को दिनांक 6 नवम्बर, 2003 की अधिसूचना सं० 14/3/2003-डीजीएडी द्वारा अधिसूचित किया और हितबद्ध पार्टियों से यह अनुरोध किया कि वह इसके प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से लिखित रूप में अवगत कराएं।
- viii. प्राधिकारी ने ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को प्रारम्भिक जांच-परिणाम की एक प्रति इस अनुरोध के साथ प्रेषित की कि प्रारम्भिक जांच-परिणामों से सम्बन्धित उनके विचार, यदि कोई हैं, इस पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर प्रस्तुत करें।
- ix. प्राधिकारी ने सम्बद्ध देश के नई दिल्ली स्थित दूतावासों को भी प्रारंभिक जांच-परिणाम की एक प्रति इस अनुरोध के साथ भेजी कि प्रारंभिक जांच-परिणामों पर अपने विचार प्रस्तुत करें।
- x. प्राधिकारी ने दिनांक 9.1.2004 को हितबद्ध पार्टियों की मौखिक सुनवाई की, जिसमें हितबद्ध पार्टियों के प्रतिनिधित सम्मिलित हुए। सार्वजनिक सुनवाई में शामिल पार्टियों से, मौखिक रूप से व्यक्त विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इन जांच-परिणामों में हितबद्ध पार्टियों से प्राप्त लिखित अनुरोधों पर विचार किया है।
- xi. प्रारंभिक जांच-परिणामों की घोषणा से पहले हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों, जिन्हें पहले अधिसूचित प्रारंभिक जांच परिणामों में प्रकाशित किया गया है, को संक्षिप्तता की वजह से इसमें दोहराया नहीं गया है। हालांकि हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रारंभिक जांच परिणाम के बाद दिए गए तर्कों पर इन जांच-परिणामों में जहां भी उपयुक्त समझा गया है, उचित कार्रवाई की गयी है।
- xii. भारत में सम्बद्ध वस्तु के उत्पादन की सर्वोत्तम लागत तथा उसके निर्माण एवं बिक्री की लागत सामान्य स्वीकृत लेखा सिद्धांत (जीएएपी) के आधार पर तथा याचिकाकर्ता द्वारा प्रदत्त लागत सूचना के विश्लेषण के आधार पर निकाली गई थी।

- xiii. प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक याचिकाकर्ता द्वारा प्रदत्त सूचना को सत्यापित किया।
- xiv. उपर्युक्त पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन जांच-परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्यों/आधारों को दिनांक 11 जून, 2004 को ज्ञात हितबद्ध पार्टियों के समक्ष प्रकट किया गया। और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर भी इन जांच-परिणामों में विधिवत विचार किया गया।
- xv. जांच 1 अप्रैल, 2002 से 31 मार्च, 2003 तक की अवधि के लिए की गयी थी और क्षति विश्लेषण पाटन जांच अवधि अर्थात् 2002-2003 के साथ-साथ 1999-2000, 2000-2001 एवं 2001-2002 की अवधि के लिए किया गया था।
- xvi. **** अधिसूचना में हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और नियमांतर्गत प्राधिकारी ने उसे गोपनीय माना है।

ख. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

2. वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद क्लोरोक्विन फॉस्फेट है। क्लोरोक्विन फॉस्फेट एक कार्बनिक रसायन है और इसे प्राथमिक रूप से मलेरिया की औषधि में प्रयोग किया जाता है। यह सफेद या लगभग सफेद क्रिस्टलाइन पाउडर, हाइड्रोसकोपिक, जल में मुक्त रूप से घुलनशील, ईथर या मेथेनॉल है। इसे सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के सी.शु. उपशीर्ष सं. 293921 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

3. इसमें 98.5% से अधिक और 101.0% से कम एन 4 (7-क्लोरोक्विनोल 4-आइल)-एन 1, एन 1-डाइथयपेन्टेन- 1,4-डायमाइनबिस (डिहाइड्रोजन फॉस्फेट), होता है जिसे एनहाइड्रस पदार्थ के संदर्भ में परिकलित किया जाता है। क्लोरो-फॉस्फेट के उत्पादन के ए मेटाक्लो एनीलिन तथा इथॉक्सी मेथीलीन ईस्टर (ईएमएमई) की आपसी अनिक्रिया द्वारा 4 : 7 डाइक्लोरेक्वीनोलिन तैयार किया जाता है, जिसके पश्चात् एल्कलाईन हाइड्रोलिसिस तथा क्लोरीनेशनल जैसी प्रक्रियाओं की जाती हैं। आगे इस मध्यवर्ती को नोवलिडाइमीन द्वारा संघनित किया जाता है तथा इस प्रक्रिया से प्राप्त क्लोरोक्वीन को फॉस्फोरिक अम्ल द्वारा संसाधित करके क्लोरोक्विन फॉस्फेट प्राप्त किया जाता है।

4. चीन द्वारा निर्यातित क्लोरोक्वीन फॉस्फेट तथा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित क्लोरोक्वीन फॉस्फेट में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित तथा चीन से आयातित क्लोरोक्वीन फॉस्फेट, भौतिक तथा रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया तथा प्रौद्योगिकी, कार्य तथा प्रयोग, उत्पाद विशिष्टिकरण, कीमत, वितरण तथा विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के संबंध में तुलनीय है। दोनों का तकनीकी एवं वाणिज्यिक प्रतिस्थापन किया जा सकता है। उपभोक्ताओं ने दोनों को एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया है तथा कर रहे हैं। पाटनरोधी नियमावली के अनुसार याचिकाकर्ता कंपनी द्वारा उत्पादित क्लोरोक्वीन फॉस्फेट, चीन से आयातित वस्तु के समान वस्तु है।

5. याचिकाकर्ताओं तथा चीन के उत्पादकों द्वारा अपनाई गई प्रौद्योगिकी में कोई ज्ञात अंतर नहीं है, हालांकि प्रत्येक विनिर्माता उपलब्ध सुविधाओं तथा आवश्यकताओं के अनुसार अपनी उत्पादन प्रक्रिया तय करता है।

6. इसलिए प्राधिकारी प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ यह मानते हैं कि नियम 2(घ) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देश से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु है।

ग. घरेलू उद्योग

ग. 1 निर्यातक के विचार

7. याचिकाकर्ता ने घरेलू उद्योग के प्रतिनिधित्व अर्थात् बाजार में उसकी 50% से अधिक की भागीदारी है, के अपने दावे के समर्थन में कोई विश्वसनीय आंकड़ा प्रदान नहीं किया है। दूसरी ओर आवेदक ने डीजीसीआईएंडएस जैसी सरकारी एजेंसी द्वारा प्रदत्त आंकड़े पर स्वयं संदेह व्यक्त किया।

ग. 2 प्राधिकारी द्वारा जांच

8. वर्तमान याचिका इपका लेबोरेटरीज लि. और मंगलम ड्रग्स एण्ड आर्गेनिक्स लि. द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत की गयी है। ये बहुउत्पाद कंपनियां हैं और ये अनेक उत्पादों के उत्पादन में शामिल हैं। याचिकाकर्ताओं ने विगत तीन वर्षों में संबद्ध माल का आयात नहीं किया है। याचिकाकर्ता क्लोरोक्वीन फास्फेट का निर्यात अनेक देशों को कर रहे हैं।

9. याचिकाकर्ताओं ने घरेलू उद्योग के दावे जिसे कि सत्यापित किया गया है, उत्पाद और विक्रय से संबंधित सूचना मुहैया करायी है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कुल घरेलू उत्पादन में 50% से अधिक हिस्सा रखते हैं और किसी दूसरे घरेलू उत्पादक द्वारा याचिका का विरोध नहीं किया गया है इसलिए उनके पास पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(3) (क) एवं (ख) के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से याचिका प्रस्तुत करने और नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार है।

घ. बाजार अर्थव्यवस्था की जांच और सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत का आकलन एवं पाटन मार्जिन का निर्धारण

घ.1. घरेलू उद्योग के विचार

10. घरेलू उद्योग के विचारों का सारांश निम्नलिखित है:-

(i) मैसर्स सिनोकैम व्यापारिक कंपनी राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी है। इस बारे में याचिकाकर्ता ने इसी असंख्य निर्णयों का हवाला दिया है। यह निवेदन है कि एक समान

परिस्थितियों में ईसी ने चीनी कम्पनी को एमईटी प्रदान करने से इंकार कर दिया है। ईसी ने कम्पनी के राज्य के स्वामित्व में होने की स्थिति की वजह से एमईटी देने से मना किया है। ऐसा मामला होने के कारण याचिकाकर्ताओं का विश्वास है कि इस मामले में अन्य मापदण्डों की जांच संगत भी नहीं हो सकती है।

(ii) वास्तव में एक निर्यातक को एक अलग व्यवहार केवल तभी प्रदान किया जा सकता है बशर्ते कि निर्यातक यह प्रदर्शित करे कि वह राज्य नियंत्रण से मुक्त है और मूल्य बाजार व्यवस्था सिद्धांत पर आधारित हैं। इसलिए ऐसे किसी निर्यातक को अलग पाटन मार्जिन प्रदान करने से पाटनरोधी शुल्क के साथ गम्भीर अन्याय हो सकता है। वर्तमान मामले में, जैसा कि ई सी के निर्णय से स्पष्ट है, निर्यातक को अलग व्यवहार भी प्रदान नहीं किया जा सकता है।

(iii) घरेलू उद्योग अनुरोध करता है कि सामान्य मूल्य का निर्धारण अनुबंध 1 के पैरा 7 के आधार पर किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह स्पष्ट है कि विनिर्माता कम्पनी केवल राज्य के स्वामित्व वाली व्यापारिक कंपनी के जरिए सामान बेच रही है और कंपनी का कीमतों, मात्रा अथवा अपनी निर्यात बिक्री के गंतव्यों पर कोई नियंत्रण नहीं है। तदनुसार, याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि विनिर्माता कंपनी चोंग किंग कैंग ली फार्मास्यूटिकल लि. के लिए अलग पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं किया जा सकता क्योंकि व्यापारिक कंपनी मै0 सिनोकैम जिआंग्सु इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कारपोरेशन ने यह माना है कि वे राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी हैं, दो कंपनियों में से मै0 सिनोकैम जिआंग्सु इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कारपोरेशन 100% निर्यात आयात कंपनी है और इसलिए कंपनी की कोई घरेलू बिक्री नहीं हो सकती।

(iv) यूरोपीय आयोग और संयुक्त राज्य ने अनेक पाटनरोधी जांचों में पिछले तीन वर्षों में चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में माना है और ये विश्व व्यापार संगठन के सदस्य हैं। अन्य डब्ल्यू टी ओ सदस्य देशों द्वारा चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था मानने के संबंध में यूरोपीय आयोग ने चीन से फैंरो मोलिब्डिनम के मामले में चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना है। अमरीका ने बाल बियरिंग के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांचों के मामले में चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना है। चूंकि चीन एक " गैर-बाजार अर्थव्यवस्था " देश है इसलिए चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण गैर-बाजार अर्थव्यवस्थाओं से संबंधित नियमों के अनुसार किया जाता है।

घ.2 निर्यातक के विचार

घ.2.1 मै0 चोंग किंग कांग ले फार्मास्यूटिकल कं. लि., चीन जनवादी गणराज्य (उत्पादक)

11. उत्पादक के विचार संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

(i) मै0 चोंग किंग कांग ले फार्मास्यूटिकल कं. लि. एक संयुक्त उद्यम कंपनी है जो यू एस कंपनी, हांगकांग कंपनी और निजी शेयरधारकों समेत बहुत सी चीनी कंपनियों द्वारा संयुक्त रूप से निवेशित है।

(ii) संबद्ध उत्पाद के उत्पादन के संबंध में निविष्टियों, बिक्रियों के संबंध में कोई प्रोत्साहन या कर अधिमानी व्यवहार प्रदान नहीं किया जाता और न ही कोई सब्सिडी या बिजली उपयोग संबंधी सुविधाएं दी जाती हैं। उन्होंने संबद्ध उत्पाद का उत्पादन करने के प्रयोजनार्थ सामग्रियों का आयात नहीं किया है।

(iii) उत्पाद की बिक्री इससे असंबद्ध व्यापारिक कंपनी के जरिए की जाती है। संबद्ध उत्पाद की घरेलू बिक्रियां "इंजेक्शन हेतु प्रयोग" की जाती हैं और निर्यात बिक्रियां टैबलेट संबंधी प्रयोग के लिए। उत्पादन प्रक्रिया तथा लागत में अंतर नहीं था लेकिन "इंजेक्शन" संबंधी उपयोग के लिए प्रयुक्त किस्म "टैबलेट" उपयोग वाली किस्म से अधिक कीमत की थी।

(iv) निर्यातक द्वारा यह उल्लेख किया गया है कि प्राधिकारी ने परिकल्पना के आधार पर कार्रवाई की है, चूंकि सहयोगी चीनी विनिर्माता राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी है, उन्हें स्वतः ही गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिया जाना चाहिए। प्राधिकारी ने अपने निष्कर्ष तथ्यों में अंतर पर ध्यान दिए बिना पूर्ववर्ती तथ्यों के आधार पर दिए हैं। यह अनुरोध किया गया है कि यह जरूरी नहीं है कि प्रत्येक राज्य-स्वामित्व वाली कंपनी गैर-बाजार अर्थव्यवस्था सिद्धांतों पर चलती है और उसे ऐसा दर्जा दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह अनुरोध किया गया है कि सहयोगकर्ता निर्यातक एक बोर्ड द्वारा प्रबंधित कंपनी है और कीमत नीतियों और कंपनी के प्रतिदिन के मामलों के संबंध में अपने स्वतंत्र निर्णय लेती है।

घ.2.2 मै. सिनोकेम जियांग्सु इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कॉरपोरेशन (निर्यातक)

12. निर्यातकों के विचार संक्षेप में निम्नानुसार हैं:-

(i) मै0 सिनोकेम जियांग्सु इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कॉरपोरेशन, सिनो केमिक जनरल कॉर्पोरेशन द्वारा निवेशित राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी है। यह एक व्यापारिक कंपनी है, न कि संबद्ध उत्पाद की एक उत्पादक कंपनी। संबद्ध उत्पाद का उत्पादक चोंग क्विंग कांग ले फार्मास्यूटिकल कंपनी लि. है, जिसने निर्यातक प्रश्नावली से संबंधित सूचना प्रस्तुत कर दी है।

(ii) सरकार संबद्ध उत्पाद की निर्यात बिक्रियों के संबंध में कोई प्रोत्साहन या अधिमानी व्यवहार नहीं प्रदान करती है। वे चीन, भारत और अन्य देशों में संबद्ध उत्पाद के उत्पादन में शामिल कंपनियों से संबंधित नहीं है।

घ.2.3 मै0 झेझियांग एन एच यू इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कं. लि., चीन जनवादी गणराज्य

13. मै0 झेझियांग एन एच यू इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कं. लि., ने दावा किया कि उन्होंने न तो एक उत्पादक के रूप में संबद्ध वस्तु का उत्पादन किया था और न ही एक विक्रेता के रूप में किसी बाजार शृंखला के जरिए इसे बेचा था।

घ. 3 प्राधिकारी द्वारा जांच

14. निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटनरोधी जांच की कार्यवाही इस अनुमान के साथ शुरू करते हैं कि कोई देश जिसे विनिर्दिष्ट प्राधिकारी अथवा डब्ल्यू टी ओ सदस्य देश के किसी सक्षम प्राधिकारी द्वारा जांच अवधि से पहले के तीन वर्ष के दौरान किसी पाटनरोधी जांच की प्रक्रिया के लिए गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश निर्धारित किया गया हो अथवा माना गया हो, एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 पैरा 8(2) के अनुसार वर्तमान मामले में गैर बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में चीन जन.गण. की जांच करने का प्रस्ताव किया गया है। पिछले तीन वर्षों के दौरान डब्ल्यू टी ओ सदस्य देशों अर्थात् यूरोपीय आयोग तथा अमरीका द्वारा चीन को पाटनरोधी जांच में गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। अन्य डब्ल्यू टी ओ सदस्य देशों द्वारा चीन जनवादी गणराज्य को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माने जाने के बारे में इन मामलों अर्थात् चीन जनवादी गणराज्य जिसे यूरोपीय आयोग ने एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना है, से फ़ैरो मालिबडेनम, स्टील रोप्स एवं केबल्स, हॉट रोल्ड फ्लैट प्रोडक्ट्स ऑफ नान अलॉय स्टील के निर्यात के मामले को उद्धृत किया है।

15. धारा 9 क (1) (ग) के अनुसार, प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के उद्देश्य से सभी ज्ञात निर्यातकों को एक प्रश्नावली भेजी है। चीन के निम्नलिखित उत्पादक/निर्यातकों द्वारा उत्तर प्राप्त हुए हैं :

- (i) मै0 साइनोकेम जियांग्सु इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कॉर्पोरेशन, चीन जन.गण.
- (ii) मै0 चोंग क्विंग कांग ली फार्मास्यूटिकल कं. लि., चीन जन.गण.

16. यह उल्लेख किया गया है कि मै0 सिनोकेम जिआंग्सु इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कॉर्पोरेशन एक राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी है और एक व्यापारिक कंपनी है। मै. चोंग क्विंग कांग ली फार्मास्यूटिकल कं. लि. क्लोरोक्वीन फास्फेट की एक उत्पादक है और इसने निर्यातक प्रश्नावली में उत्तर भी प्रस्तुत किया है।

17. न तो उत्पादक ने और न ही निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार के अपने दावे और अनुबंध 1 के पैरा 1 से 6 के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए एन एम ई संबंधी प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है और अनुरोध प्रस्तुत नहीं किए हैं। इसलिए चीन के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण दिनांक 4.1.2002 की अधिसूचना द्वारा यथा संशोधित नियमों के अनुबंध 1 के पैरा 7 और 8 में रखे गए गैर-बाजार अर्थव्यवस्था से संबंधित नियमों के अनुसार किया जाना है।

18. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 में अन्य बातों के साथ-साथ यह व्यवस्था है कि :

" गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत अथवा परिकलित मूल्य अथवा ऐसे किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत के आधार पर किया जाएगा अथवा जहाँ यह संभव न हो, ऐसे किसी अन्य तर्कसंगत आधार पर किया जाएगा जिसमें उचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए आवश्यकतानुसार विधिवत समायोजित समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तविक रूप से संदत्त अथवा संदेय कीमत शामिल होगी..."

19. इसके अलावा उपर्युक्त नियमावली (यथासंशोधित) के अनुबंध-1 के पैरा 8 में यह प्रावधान है कि :

" 8(1) गैर बाजार अर्थव्यवस्था देश " शब्द का अभिप्राय किसी ऐसे देश से है जिसे विनिर्दिष्ट प्राधिकारी लागत अथवा कीमत निर्धारण ढांचे के बाजार के सिद्धांतों पर प्रचालन न करने वाला निर्धारित करें ताकि ऐसे देश में पण्य वस्तुओं की बिक्री से पण्य का उचित मूल्य उप पैराग्राफ (3) में विनिर्दिष्ट मानदंड के अनुसार मालूम न हो ।

(2) यह अवधारणा होगी कि कोई देश जिसे विनिर्दिष्ट प्राधिकारी अथवा डब्ल्यू टी ओ सदस्य देश के किसी सक्षम प्राधिकारी द्वारा जांच अवधि से पहले के तीन वर्ष के दौरान किसी पाटनरोधी जांच की प्रक्रिया के लिए गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश निर्धारित किया गया हो अथवा माना गया हो, एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है ।

बशर्ते तथापि गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश अथवा ऐसे देश की संबंधित फर्में विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को सूचना अथवा साक्ष्य प्रस्तुत करके ऐसी अवधारणा का खंडन कर सकते हैं जो यह सिद्ध करें कि ऐसा देश उप पैराग्राफ (3) में विनिर्दिष्ट मानदंड के आधार पर एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं है ।"

20. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 के उप पैरा 3 में किए गए उल्लेख के अनुसार आवश्यक सूचना/साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराए हैं, ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मानदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :

(क) कच्ची सामग्रियों समेत कीमतों, लागतों और निविष्टियों, प्रौद्योगिकी एवं श्रम लागत, निविष्टि, बिक्रियां एवं निवेश के बारे में ऐसे देश की संबंधित फर्मों का निर्णय बाजारी संकेतों जो आपूर्ति एवं मांग प्रदर्शित करते हैं, के अनुरूप और इस बारे में पर्याप्त सरकारी हस्तक्षेप के बिना लिया जाता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत से बाजार मूल्य पर्याप्ततः प्रदर्शित होते हैं :

(ख) ऐसी फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति महत्वपूर्ण विकृतियों के अधीन है जो पूर्ण गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली खासकर परिसम्पत्तियों के मूल्य ह्रास, अन्य बट्टे खातों, वस्तु विनिमय व्यापार और ऋणों की क्षतिपूर्ति के जरिए भुगतान के कारण आई है :

(ग) एसी फर्म दिवालिएपन और सम्पत्ति संबंधी ऐसे कानूनों के अधीन हैं जो फर्म के प्रचालन हेतु कानूनी निश्चितता और स्थायित्व की गारंटी प्रदान करते हैं : और

(घ) विनिमय दर परिवर्तन बाजार दर पर किया जाता है :

21. प्राधिकारी पूर्वोक्त पाटनरोधी नियमों के तहत गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के मुद्दे के संबंध में 31 मई, 2001 की पाटनरोधी सीमाशुल्क अधिसूचना संख्या 28/2001 और 4 जनवरी, 2002 की अधिसूचना 1/2002 के आलोक में साक्ष्य सहित गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के मुद्दे पर चीन के उत्पादक द्वारा कोई खंडन प्रस्तुत न करने और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि निर्यातक द्वारा बाजारी शक्तियों के अनुसार संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत प्रदान नहीं की गई है, प्राधिकारी व्यापार की सामान्य प्रक्रिया संबंधी परीक्षण को लागू नहीं कर सके और दूरवर्ती आधार पर बिक्रियों का निर्धारण नहीं कर सके ।

सामान्य मूल्य

22. प्राधिकारी ने असहयोग और निर्यातक द्वारा प्रस्तुत अपर्याप्त उत्तर को ध्यान में रखते हुए संबंधित नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है । इस प्रकार अंतिम निर्धारण के प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य ****/कि.ग्रा. के रूप में संदर्भित किया गया है ।

निर्यात कीमत

23. प्रश्नावली के उत्तर में चीनी विनिर्माता/निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यातों का ब्योरा उपलब्ध कराया है । प्राधिकारी ने निर्यातक मै0 सिनोकेम जियांगसु इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कारपोरेशन, चीन जनवादी गणराज्य तथा उत्पादक मै0 चोंग क्विंगकेंग ली फार्मास्यूटिकल कं0 लि0, चीन जनवादी गणराज्य द्वारा उपलब्ध करायी गयी निर्यात कीमत पर विचार किया है और उसे डी जी सी आई एंड एस के आयात संबंधी आंकड़ों के अनुरूप पाया है । घरेलू उद्योग द्वारा अंतर्देशीय भाड़े, हैंडलिंग, बीमा, विदेशी भाड़े इत्यादि के संबंध में दावा किए गए समायोजन पर कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत निकालने की विचार किया गया है । प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण के प्रयोजनार्थ क्लोरोक्विन फॉस्फेट की कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत **** अम. डा./कि.ग्रा. निर्धारित की है ।

पाटन-मार्जिन

24. तुलना से संबंधित नियमों में निम्नानुसार व्यवस्था है :

पाटन मार्जिन निकालते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना करेगा । यह तुलना व्यापार के उसी स्तर पर सामान्यतः कारखाना द्वार स्तर पर

की जाएगी और यथासंभव उसी समयावधि के दौरान की गई बिक्रियों के संबंध में की जाएगी। स्थितियों में अंतर तथा बिक्री, कराधान, व्यापार के स्तर, मात्राएं, भौतिक विशेषताओं के रूप में अंतरों सहित कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने वाले किन्हीं अंतरों और कोई अन्य अंतर जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करते हों के लिए प्रत्येक मामले में, उनकी योग्यता के आधार पर, उचित छूट दी जाएगी।"

25. संबद्ध देश के सभी निर्यातक/उत्पादकों के लिए पाटन मार्जिन का मूल्यांकन करने के लिए प्राधिकारी ने जांच अवधि में भारत औसत सामान्य मूल्य की तुलना भारत औसत कारखाना-गत निर्यात कीमत से की है।

निर्यातक/उत्पादकों के लिए पाटन मार्जिन निम्नानुसार परिकलित होता है :-

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य(डॉलर/मी.टन)	निर्यात मूल्य	निर्यात कीमत के % के रूप में पाटन मार्जिन
सभी उत्पादक/निर्यातक	****	****	28.9%

ड. क्षति निर्धारण और कारणात्मक संबंध की जांच

ड. 1. घरेलू उद्योग के विचार

26. घरेलू उद्योग के विचार संक्षेप में निम्नानुसार है:-

(i) क्लोरोक्वीन फास्फेट मलेरिया का इलाज करने के लिए पहली पसंद की औषधि के रूप में प्रयोग की जाती है। चीन और भारत क्लोरोक्वीन फास्फेट के दो प्रमुख उत्पादक हैं। चीन के पास उसके उत्पादन की तुलना में उत्पाद की घरेलू खपत से काफी कम है। इसलिए चीनी उत्पादकों के पास इस किसी भी कीमत पर बेचने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता है। राष्ट्रीय मलेरिया कार्यक्रम प्रतिस्पर्धी बोलियों के जरिए क्लोरोक्वीन की गोलियां खरीदता है। इसके अलावा आम तौर पर यह विभाग सामग्री को भारी मात्रा में खरीदता है, जिसकी तत्काल खपत नहीं होती है। वस्तुतः विभाग अपने पास हर समय सामग्री का पर्याप्त स्टॉक बनाए रखता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए वर्ष वार माँग के आधार पर संबद्ध वस्तु की आवश्यकता में अनिश्चित प्रवृत्ति होती है। तथापि, यह दोहराया गया है कि ऐसी खरीद स्वयं उपभोग के लिए नहीं होती है और ये स्टॉक में जुड़ जाती है। तथापि, सरकारी खरीद के कारण हुई गड़बड़ी को अलग करके उत्पाद की खपत पर विचार करने के मामले में यह देखा जाएगा कि यद्यपि उत्पाद की मांग में कोई गिरावट नहीं आई है, तथापि वर्तमान अवधि में आयात काफी अधिक रहे हैं।

(ii) वर्ष 2000-01 के आंकड़ों की समीक्षा करते हुए, यह पाया गया है कि डीजीसीआईएण्डएस द्वारा 2000-01 में 18.23 रु. प्रति कि.ग्रा. की दर से 98.3 मीट्रिक टन का आयात दर्शाया गया है।

याचिकाकर्ताओं ने आगे अनेक महीनों के लिए आयात आंकड़ों का परीक्षण किया है जिनके ब्योरे पहले से ही प्राधिकारी के रिकार्ड में है। यह पाया गया था कि यद्यपि औसत आयात कीमत 500 रूपए से अधिक प्रति कि.ग्रा. थी, तथापि 98.3 मी.टन के 182.23 रु. प्रतिकि.ग्रा. की दर पर किए गए हैं। यह स्पष्ट तौर पर दर्शाता है कि डीजीसीआईएण्ड एस द्वारा बताए गए आंकड़ों में स्पष्ट गलती है। याचिकाकर्ताओं की बाजार सूचना भी उस महीने में आयातों की इस भारी मात्रा को नहीं दर्शाती है। उपर्युक्त के मद्देनजर याचिकाकर्ताओं ने क्षति की जांच के प्रयोजनार्थ आयातों की मात्रा का निर्धारण करते समय इस आयात की उपेक्षा की है।

(iii) संबद्ध देशों से लगातार पाटन के चलते भारत में अनेक विनिर्माता एककों को संबद्ध वस्तु का अपना उत्पादन बंद करना पड़ा है।

(iv) उत्पादन आधार वर्ष की तुलना में बढ़ा है, और इसमें 2000-01 में वृद्धि के पश्चात् काफी कमी आई है। इस प्रकार, क्षमता का उपयोग नहीं हो पाया है, जैसा कि क्षमता उपयोग की प्रवृत्ति से भी देखा जाएगा। घरेलू उद्योग ने 2000-01 में क्षमता में वृद्धि की है। इस प्रकार, उत्पाद और क्षमता उपयोग में 1999-2000 और 2000-01 के बीच काफी वृद्धि हुई है। तथापि, पाटित आयातों के कारण क्षमता उपयोग में कमी आई है।

(v) घरेलू उद्योग ने पहले पर्याप्त लागत कटौती उपाय किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन लागत में कमी आई है। यद्यपि लागत में कमी होने से घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में सुधार होना चाहिए था, तथापि घरेलू उद्योग को लाभ की स्थिति से वित्तीय घाटे की स्थिति का सामना करना पड़ा था। घरेलू उद्योग तब लाभ कमा रहा था जब उसकी लागतें अधिक थी, जबकि लागत में कमी आने से उसे नुकसान उठाना पड़ा है। किसी भी उद्योग ने केवल वित्तीय नुकसान को कम करने के लिए अपनी लागतों में कटौती करने का प्रयास नहीं किया होगा।

(vi) आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है। इस प्रकार, आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कटौती हो रही है। घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में कमी करने के बावजूद आयातों से कीमतों में कटौती हो रही है। आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से काफी कम है जिससे कीमतों में कमी हुई है। आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम है। इस प्रकार, आयातों के परिणामस्वरूप बाजार में कम कीमतों पर बिक्री हो रही है।

(vii) वर्ष 2000-01 में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई थी लेकिन तत्पश्चात् उत्पादन की प्रवृत्ति के अनुक्रम में इसकी स्थिति खराब हुई थी। निवेशों पर आय में काफी गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को लाभ की स्थिति से घाटों की स्थिति में आना पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप पूर्ववर्ती निवेशों पर धनात्मक आय की स्थिति की तुलना में प्रस्तावित जांच अवधि में निवेशों पर ऋणात्मक आय हुई है।

(viii) क्लोरोक्वीन फास्फेट डीपीसी ओ के अधीन है। सक्षम प्राधिकारी ने अभी हाल में पाटन की अनुपस्थिति में इस उत्पाद की कीमत संशोधित करके 790 रु. प्रति कि.ग्रा. की है, याचिकाकर्ताओं ने अपनी सामग्री को इन्हीं कीमतों पर बेचा होता। इस कीमत के विपरीत, घरेलू उद्योग की जांच अवधि में डीपीसीओ कीमत से काफी कीमत प्राप्त हुई है। कोई भी उद्योग निरंतर घाटों की ऐसी स्थिति में अपने अस्तित्व को बनाए नहीं रख सकता। याचिकाकर्ता यह बताना चाहेंगे कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में इस तीव्र गिरावट का एकमात्र कारण आयातों के पहुँच मूल्य में हुई तीव्र गिरावट है, जिससे घरेलू उद्योग को भारी वित्तीय घाटे उठाने पड़े हैं।

(ix) घरेलू उद्योग को देश में प्रचलित कानूनों के कारण मजदूरी में वृद्धि करनी पड़ी है। इस प्रकार, यद्यपि घरेलू उद्योग की वित्तीय स्थिति और निष्पादन की स्थिति खराब हुई है, तथापि घरेलू उद्योग को मजदूरी बढ़ाने के लिए बाध्य होना पड़ा है।

ड. 2 निर्यातक के विचार

मै0 सिनोकेम जियांग्सु इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कॉर्पोरेशन तथा मै0 चौगुइंग कांग ले फार्मास्यूटिकल कं. लि.

27. उत्पादक और निर्यातक के विचार संक्षेप में निम्नानुसार हैं: -

(i) जांचकर्ता प्राधिकारी के लिए यह आवश्यक है कि वे क्षति का निर्धारण, सकरात्मक साक्ष्य के आधार पर करें तथा प्रतिवर्ती निर्यातकों को जांचकर्ता अधिकारी द्वारा उपयोग में लाई गई हर सूचना का अवलोकन करने एवं इसके आधार पर अपने अनुरोध तैयार करने के लिए उचित अवसर प्रदान करें। यह निवेदन किया गया है कि इस मामले में गणना के लिए कोई अर्थपूर्ण सार प्रदान नहीं किया गया है। इसके साथ ही, गणना की प्रणाली को विभिन्न कारकों जैसे कि उत्पादन लागत, बिक्री एवं प्रशासनिक व्यय इत्यादि के मद्देनजर प्रकट नहीं किया गया है।

(ii) भारत सरकार का राष्ट्रीय मलेरियारोधी कार्यक्रम क्लोरोक्वीन फॉस्फेट प्रतिपादनों का प्रमुख ग्राहक है। रिकॉर्डों द्वारा सरकारी प्रापण में आई प्रत्यक्ष गिरावट का पता चलता है जो वर्ष 2000-01 में 175 से घटकर वर्ष 2002-03 में 50 रह गई है। तथापि, वर्ष 2001-02 में सरकारी प्रापण केवल 12.5 था जो 2002-03 में बढ़ गया है। अब वास्तविक बिक्री के आंकड़ों की तुलना सरकारी प्रापण से करने पर यह ज्ञात हुआ है कि वर्ष 2000-01 में घरेलू बिक्री 125.66 थी जबकि निर्यात बिक्री 152.55 थी। वर्ष 2001-02 में जब सरकारी प्रापण 175 से 12.5 तक घट गया था, तब घरेलू बिक्री भी पिछले वर्ष के 125.66 से घट कर 87.32 तक रह गई थी। दूसरी ओर वर्ष 2001-02 में निर्यात बिक्री 152.55 से बढ़कर 204.38 हो गई। अब जबकि वर्ष 2002-03 में सरकारी प्रापण 12.5 से बढ़कर 50 हो गया है तब घरेलू बिक्री में भी 87.32 से 113.49 की वृद्धि प्रदर्शित हुई जबकि निर्यात बिक्री 204.38 से घटकर 191.97 रह गई। इससे यह प्रदर्शित होता है कि घरेलू बिक्री काफी हद तक सरकारी प्रापण पर निर्भर थी। यह स्पष्ट है कि चीन से आयातों में बाजार हिस्सा वर्ष 1999-00 से वर्ष 2002-03 तक स्थिर रहा है। यदि नौ-परिवहन प्रभार को शामिल किया जाता है तो वर्ष 1999-2000, 2002-2003 की अवधि में बाजार हिस्से में 221.46 से 129.91 की मामूली वृद्धि प्रदर्शित होती है।

(iii) जांच की अवधि के दौरान व्यापारिक मांग में बाजार हिस्से में घरेलू उद्योग में 91.83 से 100.17 की वृद्धि प्रदर्शित होती है, जबकि चीन से आयातों के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। यहां तक कि कुल मांग के बाजार हिस्से में भी घरेलू उद्योग तथा आयातों में मामूली वृद्धि प्रदर्शित होती है। इसलिए यह निवेदन किया गया है कि यद्यपि संबद्ध वस्तुओं की मांग में कमी आ रही है, फिर भी घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है, और इस प्रकार भविष्य में आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि होने के कोई संकेत नहीं हैं। याचिकाकर्ता की चिंता का मुद्दा केवल लाभप्रदता में कमी आना है, जिसका संभावित कारण मलेरिया के काफी हद तक उन्मूलन के कारण मांग में कमी आना है जिसके परिणामस्वरूप सभी स्तरों पर कीमत में कटौती हुई है।

(iv) याचिकाकर्ता की लाभप्रदता में कमी प्रति कर्मचारी उत्पादकता तथा वस्तु सूची में वृद्धि में आई कमी के कारण हुई है। क्षमता उपयोग में 106 से 84 तक की कमी से भी लाभ में कमी आई है। अतः उत्पादन के कारकों एवं अन्य आंतरिक कारकों के खराब प्रबंधन के कारण आयातों में कथित वृद्धि की तुलना में लाभप्रदता में अधिक कमी हुई है।

(v) निर्यातक निवेदन करते हैं कि संबद्ध वस्तु को निर्विवाद रूप से डी पी सी ओ (ड्रग प्राइस कंट्रोल ऑर्डर) के अंतर्गत शामिल किया जाता है। इसे न्शियल कमोडिटीज एक्ट 1955 की धारा 3 के तहत प्रदान की गई शक्तियों के अनुपालन में केंद्र सरकार ने जीवन रक्षक औषधियां उचित कीमतों पर उपलब्ध कराने के उच्च सामाजिक लक्ष्य से एक डी पी सी ओ जारी किया है। डी पी सी ओ के अंतर्गत केन्द्र सरकार को एक औषधि के लिए अधिकतम कीमत तय करने का अधिकार है, जिससे अधिक मूल्य पर कोई भी इस प्रकार की जीवन रक्षक औषधियों एवं दवाईयों की बिक्री नहीं कर सकता है। तथापि, अधिकतम कीमत के निर्धारण से औषधि के विनिर्माता/बिक्रीकर्ता को विनिर्दिष्ट औषधियां, डी पी सी ओ कीमत पर बेचने का अधिकार प्राप्त नहीं होता। डी पी सी ओ के लक्ष्यों के अनुसार, केन्द्र सरकार ने हाल ही में संबद्ध वस्तुओं के लिए डी पी सी ओ कीमत का संशोधन किया है तथा 790 रु./कि.ग्रा. पर कीमत का निर्धारण किया है। आयातकों द्वारा ली जा रही कीमत डी पी सी ओ के लक्ष्य के अनुकूल है तथा याचिकाकर्ता को कीमत संरक्षण की मांग करने तथा अपनी औषधियां केवल डी पी सी ओ कीमत पर बेचने का कोई अधिकार नहीं है। चीनी विनिर्माताओं की ओर से प्रतिस्पर्धा के कारण बाजारी शक्तियों को अनौचित्यपूर्ण लाभ मार्जिनों पर रोक लगाने के लिए कीमत निर्धारण करने पर बाध्य होना पड़ा है, जिसके कारण सार्वजनिक हितों की पूर्ति हुई है।

ड. 3. प्राधिकारी द्वारा जांच

28. क्लोरोक्वीन फॉस्फेट का उपयोग मलेरिया तथा मलेरिया जैसे लक्षणों, के उपचार में किया जाता है। चीन तथा भारत क्लोरोक्वीन फॉस्फेट के दो प्रमुख उत्पादक हैं लेकिन चीन जनवादी गणराज्य में इसकी अधिक खपत नहीं होती है क्योंकि चीनी उप महाद्वीप में मलेरिया नहीं है। अतः, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उम्पर उल्लिखित कारण से चीन के उत्पादकों/निर्यातकों के पास वहाँ उत्पादन आधार होने के कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार को आपूर्ति करने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है।

29. भारत सरकार का राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम क्लोरोक्वीन फॉस्फेट फार्मूलेशनस का प्रमुख ग्राहक है। मलेरिया को महामारी के रूप में माना जाता है। सरकार के लिए पर्याप्त स्टॉक बनाए रखना अनिवार्य है जिसकी कभी भी आवश्यकता पड़ सकती है, अतः माँग का पैटर्न अनिश्चित है। यह भी देखा गया है कि उत्पाद की माँग में कमी नहीं हुई है जबकि आधार वर्ष 1999-2000 की तुलना में जांच अवधि के दौरान आयातों में वृद्धि हुई है।

30. घरेलू उद्योग द्वारा क्लोरोक्वीन फॉस्फेट की टैबलेट्स के उत्पादन के लिए आबद्ध रूप से विचाराधीन उत्पाद का उपभोग किया जाता है। इसी के साथ, क्लोरोक्वीन फॉस्फेट टैबलेट्स के उत्पादन के लिए विचाराधीन उत्पाद का आयात भी किया जाता है। चीन से आयातित उत्पाद को फार्मूलेटर्स द्वारा टैबलेट्स में परिवर्तित किया जाता है और ये टैबलेट्स घरेलू उद्योग के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं। इसी प्रकार, संबद्ध देश से आयातों से घरेलू उद्योग न केवल व्यापार बाजार में बल्कि उसके आबद्ध बाजार में भी प्रभावित होता है।

31. घरेलू उद्योग घरेलू उत्पादकों के लिए क्षति रहित कीमत का आकलन विचाराधीन उत्पाद की बिक्री प्राप्ति पर उचित विचार करके किया गया है। इसके अलावा कमियों को दूर करने के लिए प्राधिकारी ने कच्ची सामग्री के उपयोग, उपयोगिताओं आदि से संबंधित सरलतम प्रक्रियाओं को मानकीकृत तथा उनकी बेंचमार्किंग की है।

32. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के बारे में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-11 सिद्धांत (iv) में कहा गया है :-

"घरेलू उद्योग की चिंताओं पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संबद्ध आर्थिक कारकों का मूल्यांकन करना और उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले संकेतकों का मूल्यांकन करना शामिल होगा, इसमें बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर प्राप्ति या क्षमता का उपयोग में सामान्य या संभावित कमी, कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, सामान, रोजगार, मजदूरी वृद्धि पूंजीगत निवेश को बढ़ाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं।"

33. घरेलू उत्पादकों के मामले में प्राधिकारी ने निम्नलिखित आर्थिक मानदंडों की जांच की है :-

क्षति मापदण्ड	विवरण	इकाई	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
	वास्तविक बिक्री					
	घरेलू बिक्री	मी. टन	221	278	193	251
	निर्यात बिक्री	मी. टन	137	209	280	263
	आबद्ध खपत	मी. टन	129	231	174	93
	कुल बिक्री	मी. टन	487	718	647	607

	आबद्ध सहित घरेलू बिक्री	मी. टन	350-	509	367	344
	लाभ					
	उत्पादन लागत	सूचीबद्ध	100.00	91.64	90.84	87.40
	बिक्री कीमत	सूचीबद्ध	100.00	89.64	88.15	71.36
	लाभ/हानि	सूचीबद्ध	100	12.73	-15.17	-543.36
	आयात					
	आयात					
	चीन	मी. टन	61.65	136.53	70.05	87.08
	अन्य	मी. टन	7.00	0.00	0.00	0.00
	कुल आयात	मी. टन	68.65	136.53	70.05	87.08
	व्यापारिक माँग में बाजार हिस्सा					
	माँग	मी. टन	324.65	444.23	288.53	363.89
	घरेलू उद्योग	%	68.07	62.51	66.88	68.92
	अन्य उत्पादक	%	10.78	6.75	8.66	7.15
	चीन से आयात	%	18.99	30.73	24.45	23.93
	अन्य देशों से आयात	%	2.16	0.00	0.00	0.00
	कुल माँग में बाजार हिस्सा					
	माँग	मी. टन	453.65	675.23	462.52	456.89
	घरेलू उद्योग	%	77.15	75.34	79.34	75.25
	अन्य उत्पादक	%	7.72	4.44	5.41	5.69
	संबद्ध देश से आयात	%	13.59	20.22	15.16	19.06
	अन्य देश	%	2.16	0.00	0.00	0.00
	उत्पादकता					
	कर्मचारी	सूचीबद्ध	100.00	113.33	102.44	103.28
	प्रति कर्मचारी उत्पादकता	सूचीबद्ध	100.00	143.33	138.71	115.11
	निवेश पर आय					
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	16.14	-8.91	-412.67
	क्षमता उपयोग					
	क्षमता	मी. टन	516	725	725	725
	क्षमता उपयोग	%	93.41	99.59	94.48	79.03
	उत्पादन	मी. टन	482	722	685	573
	निर्यात कीमत					
	चीन	रू./कि.ग्रा.	659	563	586	461

	पहुँच मूल्य	रू./कि.ग्रा.	921	788	799	605
	माल सूची					
	अंतिम स्टॉक	सूचीबद्ध	100	120.05	327.31	150.54
	प्रारंभिक स्टॉक	सूचीबद्ध	100	51.55	61.89	168.74
	औसत स्टॉक	सूचीबद्ध	100	74.85	152.18	162.55
	भत्ते					
	कर्मचारियों को दिए जाने वाले भत्ते	सूचीबद्ध	100	108.93	100.92	110.56

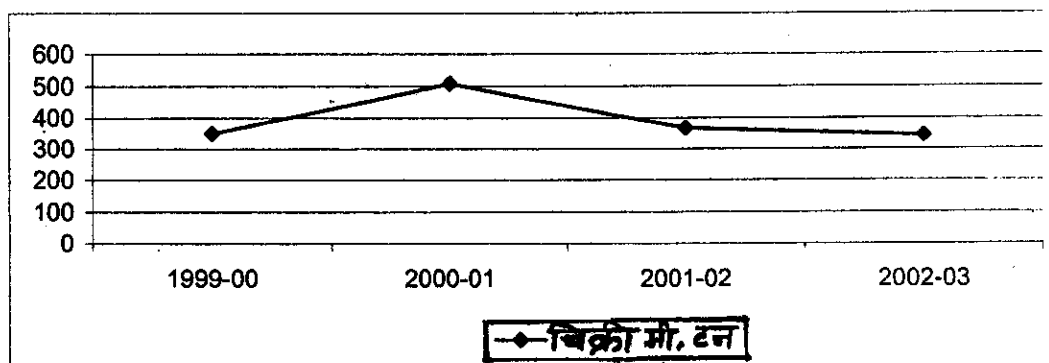
पाटित आयातों की मात्रा तथा बाजार हिस्सा

34. डी जी सी आई एंड एस, कोलकाता के आयात संबंधी सांख्यिकीय आँकड़ों की सूचना के आधार पर जाँच अवधि के दौरान चीन जन.गण. से आयातों में तुलनात्मक तथा सापेक्ष दोनों रूप से वृद्धि हुई है। प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस के सौदेवार आयात सांख्यिकीय का विश्लेषण किया और पाया कि समूचे आयात खेप मात्र चीन जन.गण. से ही हो रहे हैं। चीन से आयातों में वर्ष 2000-2001 में वृद्धि हुई है, उसके बाद 2001-02 में आयातों में गिरावट आई और 2002-03 में आयातों में वर्ष 1999-2000 की तुलना में पुनः 24 प्रतिशत वृद्धि हुई है।

35. व्यापार माँग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा कमोबेश एक जैसा रहा। तथापि, वर्ष 2001-2002 में वृद्धि के पश्चात् क्षति की अवधि में कुल माँग में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में मामूली गिरावट आई। साथ ही चीन जन.गण. से आयातों के बाजार हिस्सों में व्यापारियों एवं सकल माँग दोनों रूपों में क्रमशः 1999-2000 में 18.99 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि में 23.93 प्रतिशत और 1999-2000 में 13.59 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि में 19.06 प्रतिशत हो गया। प्राधिकारी नोट करते हैं कि व्यापारी माँग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा एक जैसा रहा है जबकि इसमें 2 प्रतिशत से कम गिरावट आई है जो कि अधिक नहीं है।

बिक्री में वास्तविक और संभावित गिरावट

36. घरेलू उद्योग की बिक्री में 2000-01 में वृद्धि हुई किन्तु 2001-02 में गिरावट आई है और जांच अवधि में उसमें पुनः वृद्धि हुई। चूँकि घरेलू उद्योग की अत्यधिक कैप्टिव खपत भी है इसलिए कैप्टिव खपत सहित बिक्रियों की जांच भी की गयी। वर्ष 2000-01 में बिक्रियों में वृद्धि मुख्यतः बोलियों/नुरखों की सरकारी खरीद में भारी वृद्धि के कारण हुई थी। यद्यपि तत्पश्चात् सरकारी खरीद में गिरावट आई तथापि घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट सरकारी खरीद में आई गिरावट से काफी अधिक थी।



37. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान सकल मांग के संबंध में बिक्री मात्रा में गिरावट आयी है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि बिक्री मात्रा में आई गिरावट के कारण घरेलू उद्योग उत्पादन नहीं बढ़ा सका क्योंकि इससे माल सूचियों में अन्यथा वृद्धि हो जाती।

उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

38. यद्यपि घरेलू उद्योग के क्लोरोक्वीन फास्फेट के उत्पादन में वर्ष 1999-00 की तुलना में जांच अवधि के दौरान 18.88 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि 2000-01 की अवधि, जब संबद्ध वस्तु की मांग जांच अवधि में सर्वोच्च रही थी, को छोड़कर क्षमता उपयोग 1999-2000 में 93.41 प्रतिशत से घटकर जांच अवधि में 79.03 प्रतिशत रह गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को वर्ष 2001-02 में वित्तीय घाटा हुआ है जब घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग 94.5 प्रतिशत था।

39. वर्ष 1999-2000 तथा 2000-2001 के बीच घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई तथापि, उसके बाद लगातार गिरावट आई। यद्यपि 2000-01 में उत्पादन में वृद्धि कुछ हद तक माँग में वृद्धि तथा एन ए एम पी द्वारा बहुत बड़ा ऑर्डर दिए जाने के कारण थी, तथापि, उसके बाद उत्पादन में आई गिरावट एन ए एम पी की माँग में आई कमी से बहुत अधिक है। इस प्रकार, यह नहीं कहा जा सकता है कि उत्पादन में गिरावट का कारण एन ए एम पी द्वारा दिए जाने वाले ऑर्डरों में कमी के कारण माँग में गिरावट है। वस्तुतः यह पाया गया है कि यद्यपि 2001-02 तथा 2002-03 के बीच कुल माँग लगभग बराबर रही है तथापि, घरेलू उद्योग के उत्पादन में गिरावट आई है।

वृद्धि

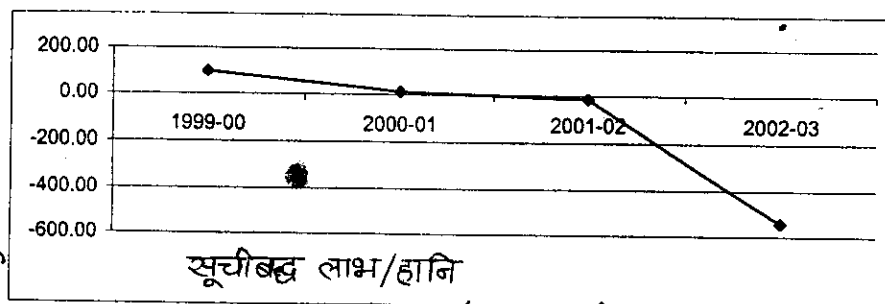
40. घरेलू बिक्री की मात्रा में वृद्धि हुई है जबकि इसी अवधि के दौरान चीन जनवादी गणराज्य से आयातों की मात्रा में 19 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आयातों की मात्रा में काफी अधिक वृद्धि हुई है जबकि संबद्ध वस्तु की माँग एक जैसी रही है और घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा भी समान रहा है। व्यापारिक माँग 1999-2000 में 324.65 मी.टन से बढ़कर जांच अवधि में 363.89 मी.टन हो गयी है जबकि कैप्टिव खपत सहित माँग भी 1999-2000 में 453.65 मी.टन से बढ़कर जांच अवधि में 456.89 मी.टन हो गयी है।

लाभप्रदता

41. उत्पादन की इकाई लागत में 1999-2000 में 100 से जांच अवधि के दौरान 87.40 तक गिरावट आई है जबकि इकाई बिक्री कीमत में 1999-2000 में 100 से जांच अवधि में 71.36 तक अत्यधिक गिरावट आई है। उत्पादन की इकाई लागत में इकाई बिक्री कीमत के अनुपात में गिरावट नहीं आई है, जिससे जांच अवधि के दौरान वित्तीय घाटे में और वृद्धि हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस तथ्य के कारण कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमत को उत्पादन लागत से कम करने पर विवश हुआ है, घरेलू उद्योग को घाटा उठाना पड़ा है। उद्योग को घटी हुई बिक्री कीमत के परिणामस्वरूप उत्पादन लागत की वसूली न होने के कारण वास्तविक क्षति हुई है जिससे वित्तीय घाटा हो रहा है।

42. क्षति विश्लेषण की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में गिरावट की तुलना में अधिक गिरावट आई है। वर्ष 1999-2000 तथा 2000-2001 में लाभ की स्थिति की तुलना में 2001-02 से घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा होने लगा जो संबद्ध वस्तु का पहुँच मूल्य 2001-02 में 799 रुपए प्रतिकिग्रा० से अत्यधिक घटकर जांच अवधि में 605 रुपए प्रति किग्रा० हो जाने के कारण 2002-03 में और बढ़ गया।

43. घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में गिरावट काफी हद तक कच्ची सामग्रियों की कीमत में गिरावट के कारण आई है। तथापि, बिक्री कीमत में आई गिरावट उत्पादन लागत में आई गिरावट से बहुत अधिक है। परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में क्षति की अवधि में लाभ की स्थिति से 2001-02 में वित्तीय घाटे की स्थिति तक धीरे-धीरे गिरावट आई जो जांच अवधि के दौरान और अधिक खराब हो गई। जब घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत अधिक थी तब उसे लाभ हो रहा था जबकि उत्पादन लागत के कम होने पर घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा उठाना पड़ा। इस प्रवृत्ति को किस प्रकार लाभप्रदता की स्थिति से घरेलू उद्योग के लाभ में कमी आई है, इस ग्राफ से देखा जा सकता है।



कीमत कटौती

44. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश द्वारा किए जा रहे पाटन का घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तु के लिए की जा रही निवल बिक्री प्राप्ति पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है, चूंकि संबद्ध देश से आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम था। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत से बहुत कम है और इस प्रकार आयातों के कारण घरेलू

उद्योग द्वारा कीमतों में वैधानिक वृद्धि किए जाने में रूकावट पड़ रही थी। पूरी क्षति अवधि के दौरान चीन से आयात की कीमतों में काफी गिरावट आई। 1999-2000 से जांच अवधि के बीच यह गिरावट लगभग 28% थी।

45. यह भी पाया गया है कि समूची क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देश से हुए आयातों से घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हो रही थी और कटौती मार्जिन जांच अवधि के दौरान 5 प्रतिशत से 16 प्रतिशत के बीच रहा था।

कम कीमत पर बिक्री

46. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम कीमत पर बिक्री क्षति के मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण सूचक है। अतः प्राधिकारी ने क्षति रहित कीमत निकाली है और कम कीमत पर बिक्री की सीमा पर पहुंचने के लिए इसकी तुलना पहुंच मूल्य से की है।

47. विश्लेषण से कम कीमत पर बिक्री के महत्वपूर्ण स्तर का पता चलता है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति पहुंच रही है। इस प्रकार उपलब्ध साक्ष्य की जांच से पता चलता है कि जांच अवधि में घरेलू उद्योग ने कुल मिलाकर संबद्ध वस्तुओं की बिक्रियों पर वास्तविक क्षति उठाई है।

प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान कम कीमत पर बिक्री की सीमा का निर्धारण किया है और उसे जांच अवधि के दौरान 12% से 21% के बीच पाया है।

कीमत ह्रास

48. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जनवादी गणराज्य द्वारा संबद्ध वस्तु की आयात कीमत में लगातार कमी आने से घरेलू उद्योग उत्पाद की बिक्री उसकी उत्पादन लागत से काफी कम कीमत पर करने के लिए विवश हुआ। इन कम कीमतों पर कीमत कटौती 5 प्रतिशत से 16 प्रतिशत से रही थी यदि इसने उच्चतर कीमतों पर बिक्री की होती तो कीमत कटौती काफी गंभीर और भारी मात्रा में रही होती। इस प्रकार इस मामले में कीमत में काफी अधिक ह्रास हुआ है। चीन से हुए आयातों से भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत का ह्रास हुआ। परिणामतः घरेलू उद्योग की कीमत में गिरावट आई जैसा कि निम्नलिखित तालिका में देखा जा सकता है:-

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
बिक्री कीमत	973	839	780	644
आधार वर्ष की तुलना में गिरावट		13.77	19.84	33.84

आयातों से घरेलू बाजार की कीमत पर अत्यधिक ह्रासकारी प्रभाव पड़ रहा था क्योंकि घरेलू उद्योग पाटित आयातों के मद्देनजर अपनी बिक्री कीमत बढ़ाने में समर्थ नहीं था।

घरेलू कीमत को प्रभावित करने वाले कारक

49. समूची क्षति अवधि के दौरान चीन जनवादी गणराज्य से संबद्ध वस्तु के सी आई एफ कीमत में वृद्धि हुई है। जांच अवधि के दौरान इसमें 29 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। घरेलू बिक्री कीमत,

पाटित आयातों की पहुँच मूल्य और घरेलू बाजार में आ रही मात्रा पर निर्भर होती है। घरेलू उद्योग ने कीमत के कटौती के साथ-साथ कीमत में भारी ह्रास किया है जिनसे संबद्ध वस्तु की आयात कीमत में गिरावट के कारण घरेलू कीमतें प्रभावित हुई हैं।

माल सूची

50. घरेलू उद्योग द्वारा अपनी माल सूची कम करने के लिए उत्पादन घटाने के बावजूद आधार वर्ष 1999-2000 की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग की माल सूची में वृद्धि हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि औसत माल सूची स्टॉक वर्ष 1999-2000 में 100 (सूचीकृत) से बढ़कर जांच अवधि में 162.55 हो गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातों से माल सूची का स्तर कम हुआ है अन्यथा निर्यातों में वृद्धि को देखते हुए माल सूची का स्तर वर्तमान स्तर से काफी अधिक रहा होता। उत्पादन के प्रतिशत के रूप में औसत माल सूची स्टॉक भारी निर्यात बिक्री के बावजूद 1999-2000 में 5.67 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि में 7.76 प्रतिशत हो गया अन्यथा स्टॉक की स्थिति खराब हो गयी होती।

51. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि जांच अवधि में निर्यात कीमत में भारी कमी के कारण घरेलू उद्योग ने बिक्री कीमत को प्रतिस्पर्धा स्तर पर रखने और न्यूनतम स्टॉक रखने के लिए अपनी बिक्री कीमत घटायी है।

निवेश पर आय और पूंजी जुटाने की योग्यता

52. जांच अवधि के दौरान निवेश पर आय में काफी गिरावट आई। घरेलू उद्योग को घाटे की स्थिति की ओर जाने के लिए बाध्य होना पड़ा है जिससे वर्ष 2000-2001 में निवेश पर हुई सकारात्मक आय की बजाय निवेश पर ऋणात्मक आय हुई। जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए निवेश पर आय की दर घरेलू उद्योग के लिए घाटे के कारण नकारात्मक है। घरेलू उद्योग इस उत्पाद के लिए ताजा पूंजी जुटाने या नए निवेश को नियोजित करने में अक्षम रहा है। निवेश पर आय घटी है और घरेलू उद्योग तर्कसंगत लाभ अर्जित करने में भी सक्षम नहीं है जिसके परिणामस्वरूप निवेशों पर नकारात्मक आय हो रही है।

रोजगार

53. घरेलू उद्योग का रोजगार स्तर 2000-2001 के बीच, जब उत्पाद की मांग सर्वोच्च थी, बढ़ा है। तत्पश्चात अगले वर्ष कर्मचारियों की संख्या में उत्पादन तथा बिक्री में गिरावट के कारण कमी आई। तथापि, जांच अवधि में कर्मचारियों की संख्या बढ़ी तथा बिक्री मात्रा में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में गिरावट आई। प्राधिकारी नोट करते हैं कि रोजगार में यह परिवर्तन घरेलू उद्योग को भारी घाटे और कुशलता और उत्पादकता को अधिकतम बनाने के लिए एक कीमत कटौती संबंधी उपाय के कारण है। तथापि प्राधिकारी नोट करते हैं कि रोजगार के स्तर में इस गिरावट का पता नहीं लगाया जा सकता जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई।

उत्पादकता

54. घरेलू उद्योग की उत्पादकता, जैसा कि प्रति कर्मचारी उत्पादन के रूप में प्रतिफलित है, में 1999-2000 तथा 2000-2001 के बीच वृद्धि प्रदर्शित हुई। तथापि, इसके पश्चात् जांच अवधि तक उत्पादकता में गिरावट आई। हालांकि, यह भी पाया गया कि घरेलू उद्योग ने अपनी उत्पादन सुविधाओं का अन्य उत्पादों के उत्पादन के लिए उपयोग किया जबकि पाटन के परिणामस्वरूप संयंत्र का उपयोग क्लोरोक्वीन फास्फेट के उत्पादन के लिए नहीं किया जा रहा था। अतएव यह नहीं कहा जा सकता कि उत्पादकता में कमी के चलते घरेलू उद्योग को कोई क्षति हुई।

मजदूरी

55. घरेलू उद्योग की मजदूरी में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान 100 से 110.56 की वृद्धि परिलक्षित होती है जो कि उत्पादन की लागत में वृद्धि का कारण हो सकता है। हालांकि यह पाया गया है कि लाभप्रदता में कमी, घरेलू उद्योग की मजदूरी में वृद्धि की तुलना में काफी अधिक है। इसलिए, जहाँ मजदूरी में वृद्धि से मजदूरी में सामान्य वृद्धि प्रदर्शित होती है वहीं यह निश्चित नहीं किया जा सकता कि वित्तीय घाटे का कारण मजदूरी में वृद्धि है।

नकदी प्रवाह

56. दोनों याचिकाकर्ता कंपनियां बहुउत्पाद कंपनियां हैं और वे विचाराधीन उत्पाद के लिए नकदी लाभ का अलग-अलग रिकार्ड नहीं रखते हैं। अतः प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद के संबंध में नकदी प्रवाह का सुनिश्चित निर्धारण नहीं कर सकते। प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस वजह से हुई क्षति की पुष्टि नहीं की जा सकती।

पाटन मार्जिन की मात्रा

57. चीन जनवादी गणराज्य से पाटन मार्जिन की मात्रा काफी अधिक है जैसे कि पाटन के निर्धारण शीर्ष के तहत जांच और गणना की गयी है।

च. कारणात्मक संबंध

58. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कारणात्मक संबंध के मुद्दे के संबंध में किए गए निवेदनों की ध्यानपूर्वक जांच की है। प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात् प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग की वास्तविक क्षति तथा घरेलू उद्योग की वास्तविक क्षति और पाटित आयातों के बीच कारणात्मक संबंध से संबंधित मुद्दों की विस्तृत जांच की गयी थी। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II के पैराग्राफ (V) का पाठ निम्नानुसार है :

यह अवश्य प्रदर्शित किया जाना चाहिए कि पाटित आयातों से पाटन के प्रभावों के जरिए, जैसा कि ऊपर पैरा (ii) तथा (iv) में दिखाया गया है, घरेलू उद्योग को क्षति पहुँच रही है। पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग की क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का प्रदर्शन निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष संगत साक्ष्य की जांच पर आधारित होगा। निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटित आयातों से इतर किन्हीं अन्य ज्ञात कारकों की भी जांच करेंगे जिनसे उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति पहुँच रही है। इस संबंध में संगत कारकों में अन्य बातों के साथ-साथ पाटन कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा तथा कीमतें, मांग में संकुचन या खपत की पद्धतियों में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं तथा विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी विकास और निर्यात कार्य निष्पादन तथा घरेलू उद्योग की उत्पादकता शामिल हैं।

59. प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं के पास संबद्ध वस्तु का स्थिर बाजार हिस्सा था परन्तु यह जांच अवधि में सकल मांग में 2% कम हो गया। समूचे आयात केवल चीन जन गणराज्य से हो रहे हैं। अतः अन्य देशों से आयातों का घरेलू उद्योग पर कोई मात्रात्मक प्रभाव नहीं पड़ा था। कीमत प्रभाव की जांच करने में अर्थात् कि क्या पाटित आयातों से भारत में समान उत्पाद की कीमत महत्वपूर्ण रूप से कम हुई है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश की संबद्ध वस्तु के पहुँच मूल्य याचिकाकर्ताओं की निवल बिक्री कीमत से कम थे जिससे घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत कम होती है। इस प्रभावी कटौती से घरेलू उद्योग की लाभप्रदता का ह्रास हो रहा है।

60. प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव और उद्योग की स्थिति पर उनके परिणाम की जांच की है।

61. संबद्ध वस्तु के निर्यात में संबद्ध वस्तु के उत्पादन के अनुपात में वृद्धि हुई है। निर्यातों में वृद्धि उत्पादन में वृद्धि से अधिक है और घरेलू उद्योग निर्यातों में वृद्धि के कारण अपना उत्पादन बनाए रखने में समर्थ नहीं है अन्यथा जांच अवधि में काफी अधिक गिरावट आ गयी होती यदि घरेलू उद्योग ने निर्यात नहीं किया होता। इसके अलावा, निर्यातों से माल सूची के स्तर में कमी आयी है। अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातों से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

62. क्लोरोक्वीन फास्फेट का प्राथमिक उपयोग मलेरिया की दवाई के रूप में किया जाता है। याचिकाकर्ता कंपनियों में से एक कंपनी मैसर्स इपका लैक्स नुस्खे भी तैयार करती है जिसके लिए कंपनी कारखाने में ही उत्पादित क्लोरोक्वीन फास्फेट का प्रयोग कर रही है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान कंपनी की कैप्टिव खपत में गिरावट आई है। राष्ट्रीय मलेरिया रोधी कार्यक्रम क्लोरोक्वीन फास्फेट की गोलियों की खरीद हेतु नियमित निविदाएं जारी करता है। यह देखा जा सकेगा कि इपका केवल 2000-01 में ही एन ए एम पी से आर्डर हासिल करने में सफल रही है। इसके परिणामस्वरूप 2000-01 के बाद इपका द्वारा नुस्खों की तैयारी में कमी आयी उसके बाद कैप्टिव खपत में भी गिरावट आई। कैप्टिव खपत में आई इस गिरावट से कंपनी की घरेलू बिक्री कम हुई। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कैप्टिव खपत में गिरावट घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं है।

63. यह नोट किया जाता है कि जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ता कंपनियों में से एक मै0 मंगलम के अनुसार संयंत्र उपयोग कम रहा है। सामान्य परिस्थितियों में, संयंत्र के कम उपयोग का परिणाम स्थिर कीमत का उच्च निर्धारण होना चाहिए। इस मुद्दे की सत्यापन के दौरान जांच की गई। हालांकि, कम उत्पादन के मामले में कंपनी के पास यह विकल्प होता है कि वह या तो अन्य रसायनों का उसी संयंत्र में उत्पादन करे या संयंत्र को खाली छोड़ दे। इस मामले में कंपनी ने संयंत्र का उपयोग अन्य रसायनों के उत्पादन हेतु किया जिससे संयंत्र का अत्यधिक उपयोग हुआ। कंपनी ने संयंत्र के अपने नियत खर्चों को समतुल्य उत्पादन मात्रा के आधार पर एक ही संयंत्र में उत्पादित क्लोरोक्वीन फास्फेट तथा अन्य उत्पादों को आबंटित कर दिया। इसलिए क्लोरोक्वीन फास्फेट के उत्पादन के मामले में तुलनात्मक कम संयंत्र उपयोग में इसकी लागत पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं दर्शाया। इसलिए, प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के मामले में कम संयंत्र उपयोग के कारण नियत लागत का उच्च निर्धारण नहीं हुआ है तथा इस कारण क्षति (स्वयं के कारण) नहीं हुई है।

64. व्यापारिक मांग वर्ष 1999-2000 के दौरान 324.65 मी.टन से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 363.89 मी.टन हो गई है (बल्कि मांग बढ़ी है)। कैप्टिव सहित मांग भी जांच अवधि के दौरान बढ़ी है। इसके अतिरिक्त ऐसा कोई अन्य घटक नहीं है जैसे व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथा अथवा प्रौद्योगिकी में विकास जिससे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हो सकती थी। इसके अतिरिक्त आयातों के पाटित मूल्य से घरेलू उद्योग अपनी इष्टतम लाभकारिता प्राप्त नहीं कर सका।

65. चीन से हुए समग्र आयातों से भारतीय बाजार में उत्पाद की कीमतें इस हद तक कम हो गई कि घरेलू उद्योग अपने उत्पादन की पूरी लागत वसूलने और भारत में संबद्ध वस्तु की बिक्री से यथोचित लाभ प्राप्त करने से वंचित हो गया। भारत में पाटित आयात ऐसी कीमत पर आ रहे थे जिससे समान घरेलू उत्पाद की कीमतें महत्वपूर्ण रूप से कम हुईं। इस प्रकार पाटित आयातों की पहुँच कीमत के कारण कीमत में कमी आई।

66. पाटित आयातों से इतर ऐसे ज्ञात कारकों जिनसे उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति हुई है, की जांच यह सुनिश्चित करने के लिए की गयी है कि इन कारकों से हुई संभावित क्षति पाटित आयातों के कारण नहीं हुई थी। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के अन्य ज्ञात कारकों के प्रभाव की भी जांच की और यह नोट किया कि घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति अन्य ज्ञात कारकों की वजह से नहीं हुई है।

छ. क्षति संबंधी निष्कर्ष:

67. पूर्वोक्त से प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति के संबंध में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले हैं :-

- (क) संबद्ध देश से आयात समग्र रूप से बढ़े हैं।
- (ख) आयातों से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में महत्वपूर्ण रूप से कटौती हो रही है।
- (ग) घरेलू उद्योग की लाभप्रदता बुरी तरह कम हुई है जिसके परिणामस्वरूप वित्तीय घाटा हुआ है।
- (घ) घरेलू उद्योग कीमत कमी/मंदी के कारण क्षति उठा रहा है क्योंकि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से कम है।

- (ड.) घरेलू उद्योग को कम कीमत पर बिक्री के कारण क्षति पहुँच रही है क्योंकि संबद्ध वस्तुओं का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग के उचित बिक्री कीमत से कम है।
- (च) घरेलू उद्योग ने वास्तविक क्षति उठाई है।

ज. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

68. प्राधिकारी का यह मानना है कि सामान्य रूप से पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः स्थापित किया जा सके जो देश के सामान्य हित में है।

69. प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि यद्यपि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तुओं का प्रयोग करके विनिर्मित किए गए उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धा पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है, तथापि भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा इन पाटनरोधी उपायों से कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन प्रथाओं द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ नहीं होंगे और घरेलू उद्योग का पतन रुक जाएगा तथा उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु का अधिक चयन उपलब्ध होने में सहायता मिलेगी।

झ. पहुँच मूल्य

70. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुँच मूल्य सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1962 और सीमाशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9, 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सीमा शुल्कों के लागू स्तर के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित परिकलन योग्य मूल्य होगा।

निष्कर्ष

71. उपर्युक्त पर विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि :-

- (क) चीन जन.गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित की संबद्ध वस्तु सभी किस्में भारत में इसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर निर्यात की गई है।
- (ख) घरेलू उद्योग को भी वास्तविक क्षति पहुँची है।
- (ग) संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन से घरेलू उद्योग को क्षति पहुँची है।
- (घ) इस प्रकार प्राधिकारी संबद्ध देश के मूल से अथवा वहां से निर्यातित अध्याय 29 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करना आवश्यक समझते हैं।

72. तदनुसार प्राधिकारी चीन जन.गण. के मूल से/अथवा वहां से निर्यातित क्लोरोक्विन फॉस्फेट के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं। पाटनरोधी शुल्क निम्न तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित राशि और निम्नलिखित देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ के अध्याय 29, सीमाशुल्क उपशीर्ष 293921 के अंतर्गत आने वाले क्लोरोक्विन फॉस्फेट के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से लगाए जाने वाले आयातों/कि.ग्रा. के पहुँच मूल्य के बीच का अन्तर होगा :-

क्र.सं.	उप-शीर्ष	माल का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	293921	क्लोरोक्विन फॉस्फेट	बल्क	चीन जन. गणराज्य	चीन जन. गणराज्य	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	15.04	कि.ग्रा.	अमरीकी डॉलर
2	293921	क्लोरोक्विन फॉस्फेट	बल्क	चीन जन. गणराज्य	चीन जन. गणराज्य के अलावा कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	15.04	कि.ग्रा.	अमरीकी डॉलर
3	293921	क्लोरोक्विन फॉस्फेट	बल्क	चीन जन. गणराज्य के अलावा कोई देश	चीन जन. गणराज्य	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	15.04	कि.ग्रा.	अमरीकी डॉलर

73. इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुँच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के अधीन सीमाशुल्क द्वारा यथाआकलित निर्धारणीय मूल्य होगा और उसमें सभी प्रकार के सीमाशुल्क होंगे ।

74. उपर्युक्त के अधीन प्राधिकारी दिनांक 6 नवंबर, 2003 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं ।

75. इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील उपर्युक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद तथा सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी ।

अभिजित सेनगुप्त, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 15th July, 2004

Final Findings

Subject : Anti-dumping investigation concerning import of Chloroquine Phosphate originating in or exported from China PR.

No. 14/3/2003-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

A. PROCEDURE

1. The Procedure described below has been followed:

(i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received an application filed by M/s Ipca Laboratories Ltd., Mumbai and M/s. Mangalam Drugs and Organics Ltd., Mumbai, on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Chloroquine Phosphate originating in or exported from China PR(hereinafter referred to as subject country).

(ii) Preliminary scrutiny of the application filed by the applicant revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the applicant. The application was, therefore, considered as properly documented.

(iii) The Authority on the basis of prima-facie evidence submitted by the applicant considered to initiate the investigation against imports of subject goods from China PR. The Authority notified the Embassy of China PR in New Delhi about the receipt of the dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with Sub-Rule 5(5) of the Rules.

(iv) The Authority forwarded a copy of the public notice of initiation dated 16th July, 2003 to all the known exporters (whose details were made available by petitioner) and industry/user associations providing them an opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2), 6(3) and 6(4). The Authority also forwarded a copy of designed questionnaire on non-market economy as per para 8(3) of Annexure-I of AD Rule to exporters to file their responses.

- (v) The Authority made available the public file as per Rule 6(7) to all interested parties containing non-confidential version submitted by interested parties for inspection, upon request.
- (vi) The Authority made a request to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) and DGCI&S, Kolkata to arrange details of imports of the subject goods during past three years, including the period of investigation.
- (vii) The Designated Authority notified preliminary findings vide Notification No. 14/3/2003-DGAD dated the 6th November 2003 with regard to Anti Dumping investigations concerning imports of Chloroquine Phosphate originating in or exported from China PR and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication.
- (viii) The Central Government notified the duty vide notification no177/2003-Customs dated 15th December 2003.
- (ix) The Authority held a verbal hearing on 09/1/2004 to hear the interested parties, which was attended by representatives of the interested parties. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed verbally. Designated Authority considered these submissions as such received from interested parties in these findings.
- (x) Arguments raised by interested parties before notifying Preliminary Findings, which have been brought out in the Preliminary Findings notified earlier have not been repeated herein for sake of brevity. However, arguments raised after the preliminary findings by the interested parties have been appropriately dealt in these findings wherever appropriate.
- (xi) Cost investigations were conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) on the information furnished by the applicant so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- (xii) The Authority verified the information provided by the petitioner companies to the extent considered necessary.
- (xiii) In accordance with Rule 16 of the anti dumping Rules supra, the essential facts considered for these findings were disclosed on dated 11th June 2004 to known interested parties and comments received on the same have also been duly considered in these findings;
- (xiv) The Authority considered the period of investigation of twelve months from 1st April 2002 to 31st March 2003 and injury analysis was carried out for the periods 1999-2000, 2000-2001 and 2001-2002 along with the dumping period of investigation i.e., April, 2002-December, 2003.

(xvi) **** in the Notification represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by Authority under the Rules.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE:

2. The product under consideration in the present petition is Chloroquine Phosphate. Chloroquine Phosphate is an organic chemical and primarily used as drug for Malaria. It is a white or almost white crystalline powder, hygroscopic, freely soluble in water, slightly soluble in alcohol, ether and methanol. Chloroquine Phosphate is classified under customs sub-heading no. 293921 under Chapter 29 of the Customs Tariff Act.

3. It contains not less than 98.5% and not more than equivalent to $101.0\%N^4(7\text{-chloroquinolin-4-yl})\text{-}N^1,N^1\text{-diethylpentane-1,4-diaminebis(di-hydrogen phosphate)}$, calculated with reference to the anhydrous substance. For production of Chloroquine Phosphate intermediate 4:7 Dichloroquinoline is prepared by the reaction of Meta Chloro Aniline with Ethoxy Methylene Ester (EMME) followed by Alkaline Hydrolysis and Chlorination. This Intermediate is further condensed with Novalidiamine and Chloroquine obtained is treated with Phosphoric Acid to obtain Chloroquine Phosphate.

4. There is no known difference in Chloroquine Phosphate exported from China PR, PR and Chloroquine Phosphate produced by the domestic industry. Chloroquine Phosphate produced by the domestic industry and imported from China PR is comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The Authority notes that these two are technically and commercially substitutable. The consumers have used and are using these two interchangeably. Chloroquine Phosphate produced by the petitioner company is a like article to the goods imported from China PR in accordance with the anti dumping rules.

5. There is no known difference in the technology adopted by the applicant and by the producers in China PR, though every manufacturer fine-tunes its production process according to available facilities and necessities.

6. The Authority, therefore, for the purpose of final determination holds that the goods produced by the Domestic Industry and those exported from the subject country are like article within the meaning of the Rules 2(d) of AD Rules.

C. DOMESTIC INDUSTRY

C.1 VIEWS OF THE EXPORTER

7. The applicant has not provided any reliable data in support of their claim to represent domestic industry i.e., having more than 50% share in the

market. On the other hand the applicant themselves have placed doubt over the data provided by Government agency like DGCI&S.

C.2 EXAMINATION BY THE AUTHORITY

8. The present application is jointly filed by M/s Ipca Laboratories Ltd., and M/s Mangalam Drugs and Organics Ltd. They are multi product companies and are involved in production of number of products. The applicants have not imported the subject goods in the past three years. Applicants are exporting Chloroquine Phosphate to a number of countries.

9. Applicants have provided information regarding production and sales to establish the claim of domestic industry which were verified by a team of officers from DGAD. The Authority notes that the domestic producers constitute more than 50% of the total domestic production and therefore, have the standing to file the petition on behalf of the domestic industry as per Rule 5 (3) (a) and (b) of the Anti-Dumping Rules and also represent Domestic Industry in terms of Rule 2(b).

D. EXAMINATION OF MARKET ECONOMY AND ASSESSMENT OF NORMAL VALUE, EXPORT PRICE & DETERMINATION OF DUMPING MARGIN

D.1. VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

10. The views of domestic industry are summarised below,

i) The trading company M/S Sinochem is a State Owned Company. It is stated by the domestic industry that under similar circumstances, EC has refused to grant MET to Chinese Company. EC has denied MET in situations where the company is State Owned. Such being the case, petitioners believe that examination of other parameters may not even be relevant in this case.

ii) In fact, an individual treatment can only be granted to an exporter provided that the exporter demonstrates that it is free from state control and prices are based on market driven principles. Therefore, granting separate dumping margin to such an exporter can lead to serious circumvention of anti dumping duty. In the instant case, as is evident from the decisions of the EC, the exporter cannot be granted even individual treatment.

iii) The normal value should be determined on the basis of Para 7 of Annexure I. Further it is evident that the manufacturing company is selling goods through state owned trading company only, and the company has no control regarding prices, quantities or the destination of its export sales. Accordingly a separate dumping margin cannot be assessed for the manufacturing company Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Ltd., as the trading Company, M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation has admitted that they are a state owned company. Out of the two companies, M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation is 100% Export Import

Company and therefore, there can not have any domestic sales of the company.

iv) European Commission and United States have treated China PR as non-market economy in the past three years in many anti dumping investigations and they are members of World Trade Organization. With regard to treatment of China PR as non-market economy by other WTO member countries, European Commission has treated China PR as a non-market economy in the matter of Ferro molybdenum from China PR. USA has treated China PR as a non-market economy in the matter of anti-dumping investigations concerning imports of Ball Bearing. Since, China PR is a "non-market economy" country, determination of normal value in China PR is to be done in accordance to the rules relating to non-market economies.

D.2 VIEWS OF THE EXPORTER

D.2.1 M/s. Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., China PR PR(Producer)

11. The views of the producer are summarised below,

i) M/S Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., is a joint venture company jointly invested by an American company, Hong Kong Company and several Chinese companies including private shareholders.

ii) There are no incentives or tax preferential treatment on inputs materials, sales, nor any subsidies on utilization of energy in relation to the production of the product concerned. They have not imported materials for the purpose of producing the product concerned.

iii) The product is sold through its unrelated trading company. Domestic sales of the product concerned were for "injection use", and export sales were for tablet use. The production process and cost were not varied, but the quality for "injection" use was high priced than those for "tablet" use.

iv) The Authority has proceeded on the presumption, since the co-operating Chinese Manufacturers are state owned company, they per se should be given non-market economy status. The Authority has based its conclusions only on past antecedents without having regard to deference in facts. It is submitted that it is not necessary that every state-owned company runs on non-market economy principles and should be given such status. Further, it is submitted that the co-operating exporter is a board managed company taking its independent decisions with regard to pricing policies and day to day affairs of the company.

D.2. M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation(Exporter)

12. The views of the exporter are summarised below,

i). M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation is a state-owned company invested by Sino Chemic General Corporation. It is a trading company. The producer of the product concerned is Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., and filed a separate reply relating to the Exporters questionnaire.

ii). The government gives no incentives or tax preferential treatment in relation to the export sales of the product concerned. They are not related to companies involving in the production of the product concerned in China PR, India and other countries.

D.2.3 M/s. Zhejiang NHU Import & Export Co., Ltd.ChinaPR

13. M/s. Zhejiang NHU Import & Export Co., Ltd., stated that they have neither produced the subject goods as a producer nor sold it through any market channel as a seller.

D.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY

14. The Designated Authority in an anti-dumping investigation proceeds with a presumption that any country that has been determined to be, or has been treated as, a non-market economy country for purposes of an anti dumping investigation by the Designated Authority or by the competent authority of any WTO member country during the three year period preceding the investigation is a non-market economic country as per para 8(2) of Annexure-I of AD Rules. In the instance case, China PR is proposed to be investigated as non-market economy. In the past three years China PR has been treated as non-market economy country in the anti- dumping investigations by other WTO member countries namely European Commission and USA. With regard to treatment of China PR as a non-market economy by other WTO Members countries, the applicant has cited cases namely, in the matter of Ferro molybdenum, Steel ropes & cables, Hot rolled flat products of non alloy steel from China PR where European Commission has treated China PR as a non-market economy.

15. The Authority sent a questionnaire to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A (1)(C). Responses have been received from the following producer/exporters from China PR:

- i) M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation, China PR
- ii) M/s. Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., China PR

16. M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation is a state owned company and it is a trading company. M/s. Chong Qing Kang Le

Pharmaceutical Co., Ltd., is a producer of Chloroquine Phosphate and also filed the reply in the exporters questionnaire.

17. Neither the producer nor exporter filed response to the specific questionnaire on NME for its claim of market economy treatment and determination of normal value as per para 1 to 6 of Annexure-1 of AD Rules. The NME questionnaire was sent to the Chinese producer and their representative in India on 9/09/2003 and again on 18/03/2004 to file their response to rebut the presumption of NME treatment as per para 8(3) of Annexure-I of AD Rules. The Authority notes since the Chinese producer did not submit information with regards to its claim of market economy during the course of investigation and did not respond to the deficiency raised in the preliminary findings, the test of domestic sales in the ordinary course of trade is not possible in such circumstances to determine the normal value as per provisions contained in Section 9 A 1 (C). Therefore determination of normal value in respect of China PR is to be carried out in accordance with the Rules relating to non-market economies as contained in Para 7 & 8 of Annexure-1 of Rules as amended vide Notification dated 4.1.2002.

18. The Authority notes that para 7 of Annexure 1 of anti dumping rules, inter-alia provides that:

"In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin....."

19. Further Para 8 of Annexure 1 of the Rules Supra (as amended) provides that:

"8 (1) The term "non-market economy country" means any country which the designated authority determines as not operating on market principles of cost or pricing structures, so that sales of merchandise in such country do not reflect the fair value of the merchandise, in accordance with the criteria specified in sub-paragraph(3)

(2) There shall be a presumption that any country that has been determined to be, or has been treated as, a non-market economy country for purposes of an anti dumping investigation by the Designated Authority or by the competent authority of any WTO member country during the three year period preceding the investigation is a non-market economic country;

Provided, however, that the non-market economy country or the concerned firms from such country may rebut such a presumption by providing information and evidence to the designated authority that establishes that such country is not a non-market economy country on the basis of the criteria specified in sub-paragraph (3)."

20. The Authority notes that the Chinese producer did not furnish necessary information/ evidence as mentioned in sub Para 3 of the Paragraph 8 of Annexure 1 of anti dumping Rules to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether

- a) the decision of concerned firms in such country regarding prices, costs and inputs, including raw materials cost of technology and labour, output sales and investment, are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values:
- b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts:
- c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms, and
- d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate;

21. The Authority, in view of no rebuttal by the Chinese producer on the issue of non market economy having regard to the Custom Notifications No. 28/2001 dated 31st May 2001 and No. 1/2002 dated 4th January 2002, is not in a position to examine its claim of market economy status to an individual company. The producer has not provided the cost of production of the subject goods as per market forces thus not permitting the Authority to apply the ordinary course of trade test and to determine the sales being at arm's length. Therefore the normal value in respect of China PR is determined as per Rules relating to non-market economies as contained in Para 7 of Annexure-1 of AD Rules.

NORMAL VALUE

22. The Authority in view of non-cooperation and inadequate response filed by the Chinese producer and exporter has constructed the normal value on facts available as per Rule 6(8) of AD Rules. The normal value is therefore assessed as US\$****/Kg. for the purpose of final Determination.

EXPORT PRICE

23. In response to the questionnaire the Chinese producer/exporter has furnished details of export made to India during the period of investigation. The Authority has considered the export price provided by the exporter M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation, China PR and produced by M/S Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd. China PR which corresponds to the transaction wise import data of DGCI&S. The adjustments claimed by the domestic industry with regard to inland freight, handling, insurance, overseas freight etc. have been considered to arrive at ex-factory export price to India. The Authority has determined the ex-factory export price

as US\$ ****/Kg. of Chloroquine Phosphate for the purpose of final determination.

DUMPING- MARGIN

24. The rules relating to comparison provides as follows:

"While arriving at margin of dumping, the Designated Authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability."

25. The authority has carried out weighted average normal value comparison with the weighted average ex-factory export price in Period of Investigation, for evaluation of the dumping margin for all the exporter/producers of the subject country.

The dumping margin for exporter/producers comes as under:

Exporter/Producer	Normal Value (US\$/Kg)	Export Price (US\$/Kg)	Dumping margin as % of Export Price
All exporters/Producers	****	****	28.9%

E. ASSESSMENT OF INJURY AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

E.1 VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

26. The views of domestic industry are summarised below,

i) Chloroquine Phosphate is used as drug of first choice for treating malaria. China PR and India are the two major producers of Chloroquine Phosphate. China PR has very low level of domestic consumption of the product as compared to their production. Chinese Producers, therefore, have no option but to sell the material, whatever are the prices. The National Anti Malaria Programme procures Chloroquine tablets through competitive bids. Further, the Department normally procures material in bulk, which does not get immediately consumed. In fact, the Department keeps sufficient stocks of the material at any point of time.

ii) While reviewing the data for 2000-01, it is found that an import of 98.3 MT has been reported by the DGCI&S in 2000-01 @ Rs. 182.23 per kg. Petitioners further examined import data for a number of months, details of

which are already on the record of the Authority. It was found that while the average import price was more than Rs. 500 per kg, imports of 98.3 MT has been reported @ 182.23 per kg. This very clearly shows that there is an apparent error in the data reported by the DGCI&S. Petitioners' market information also does not show this much volume of imports in that month. In view of the above, petitioners have ignored this import while determining volume of imports for the purpose of examination of injury.

iii) A number of manufacturing units in India have been forced to close their production of subject goods due to persistent dumping from the subject countries.

iv) Production has increased vis-à-vis base year, the same has declined significantly after increasing 2000-2001. Thus, the capacity has remained unutilized, as would also be seen from the trend of capacity utilization. The domestic industry has added capacity in 2000-2001. Production and hence capacity utilization increased significantly between 1999-2000 and 2000-2001. However, the fall in capacity utilization is due to dumped imports.

v) The domestic industry had earlier undertaken significant cost reduction measures, which resulted in decline in the cost of production.

vi) The landed price of imports is significantly below the selling price of the domestic industry. Thus, imports are significantly undercutting the prices of the domestic industry. The selling price of imports is below the non-injurious price of the domestic industry. Thus imports are resulting in price underselling in the market.

vii) Productivity of the domestic industry increased in 2000-01 but deteriorated thereafter on the lines of trend in production. Return on investments has significantly declined.

viii) Chloroquine phosphate is covered under DPCO. Competent Authority has very recently revised the price of this product to Rs. 790 per kg. in the absence of dumped imports, petitioners would have sold their material at these prices. As against this price, the domestic industry has realized much lower than the DPCO price in the investigation period.

ix) The domestic industry has been forced to increase the wages due to prevailing laws of the country. Thus, while the financial position and performance of the domestic industry is deteriorating, the domestic industry is forced to afford wage increases.

E.2 VIEWS OF THE EXPORTER

M/s. Sinochem Jiangsu Import and Export Corporation & M/s. Chongqing Kang Le Pharmaceutical Company Ltd.,

27. The views of the producer and exporter are summarised below,

i) It is incumbent upon the investigation authority to base the determination of injury on positive evidence and to provide the respondent exporters with timely opportunities to see and prepare presentations on the basis of all information used by the Investigating Authority. It is submitted that in the instant case no meaningful summary of the calculation has been provided. Moreover, the methodology of calculations taking into account various factors like the cost of production, selling and administration expenses etc. has not been disclosed.

ii) National Anti-Malaria Programme of the Government of India is the major customer of Chloroquine Phosphate formulations. Records reflect the obvious fall in Government procurement from 175 in 2000-01 to 50 in 2002-03. However in 2001-02 the Government procurement was 12.5 only and it increased in 2002-03. Now on comparing the data of actual sales with Government procurement it is found that domestic sales in 2000-01 were 125.66 whereas export sales were 152.55. In the year 2001-02 when Government procurement fell to 12.5 from 175 the domestic sale also fell down to the level of 87.32 from 125.66 in the previous year. On the other hand export sale in 2001-02 increased from 152.55 to 204.38. Now, in the year 2002-03 when Government procurement increased from 12.5 to 50 the domestic sale showed an increase from 87.32 to 113.49 while export sales decreased from 204.38 to 191.97. This shows that the domestic sales were much dependent on Government procurement. It is evident that the market share in imports from China PR has remained at a static level from 1999-00 to 2002-03.

iii) The market share in merchant demand reveals that domestic industry shows an increase from 91.83 to 100.17 during POI, while market share of imports from China PR is declining. Even the market share in gross demand also reflects a marginal decline in both domestic industry and imports. It is therefore, submitted that even though the demand of subject goods is declining the market share of domestic industry is not affected and as such there is no indication of substantial increase in importation in future. The only concern of the petitioner is the decline in profitability, the probable reason of which is the decline in demand due to substantial eradication of malaria which has in turn resulted into reduction of price at all levels.

iv) The decline of profitability of petitioners is the effect of decline in productivity per employee and increase in inventory. The decline in capacity utilization from 106 to 84 has also contributed to decrease in profit. Thus, the bad management of factors of production and other internal factors have in fact resulted in decline in profitability as against alleged increased in imports.

v) The exporter submits that undisputedly the subject goods are covered under DPCO (Drug Price Control Order). In pursuance of power conferred under Section 3 of Essential Commodities Act, 1955, the Central Government has issued a DPCO with noble social objective of providing the life saving drugs at affordable prices. Under DPCO the Central Government has power to fix maximum price for a drug, above which no one can sell such life saving

drugs and medicines. However the fixation of maximum price does not confer a right on manufacturer/seller of drug to sell the specified drugs at par with DPCO price. In accordance with objects of DPCO, Central Government has very recently revised the DPCO price for subject goods and has fixed price at Rs. 790/Kg. The price charged by importers is in consonance with DPCO objective and the petitioners have no right to seek price protection and to sell their drugs at DPCO price only. The fair amount of competition through Chinese manufacturers has served the public interest by enabling market forces to determine the price by putting a cut on unreasonable profit margins.

E.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY

28. Chloroquine Phosphate is used for treating malaria and symptoms like malaria. China PR and India are two major producers of Chloroquine phosphate but it is not consumed much in China PR as Chinese subcontinent is not affected with Malaria. The Authority notes that due to the production base and limited consumption in China PR, the producers/exporters from China PR have no other option but to cater international market.

29. National Anti Malaria Programme of the Govt. of India is one of the major buyers of Chloroquine Phosphate formulations. The Government is required to keep a sufficient stock which may be required at any time, however it was noted that during the injury period Government procurement pattern was not uniform.

30. One of the constituents of domestic industry consumes the product under consideration captively for producing Chloroquine Phosphate tablets apart from sales as bulk drug. However imports of the product under consideration are also made for producing Chloroquine Phosphate tablets. The product imported from China PR is converted into tablets by the formulators which compete with the domestic industry. The Authority notes that dumped imports from the subject country affect the domestic industry not only in merchant market as bulk drug but also in its captive market.

31. The non-injurious price has been evaluated for the domestic producers by appropriately considering the sales realisation for the product under consideration. Also in order to eliminate inefficiencies, the Authority has normated and benchmarked the best practices on utilisation of raw materials, utilities etc.

32. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the Anti Dumping Rules states:

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilisation of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential

negative effects on cash flow, inventories, employment wages growth, ability to raise capital investments.”

33. The Authority examined the following economic parameters in the case of domestic producers,

Injury parameter	Particulars	Unit	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
	Actual Sales					
	Dom. Sales	MT	221	278	193	251
	Export Sales	MT	137	209	280	263
	Captive consumption	MT	129	231	174	93
	Total sales	MT	487	718	647	607
	Dom. Sales including captive	MT	350	509	367	344
	Profits					
	Cost of production	Indexed	100.00	91.64	90.84	87.40
	Selling price	Indexed	100.00	89.64	88.15	71.36
	Profit/Loss	Indexed	100	12.73	-15.17	-543.36
	Imports					
	Imports					
	China PR	MT	61.65	136.53	70.05	87.08
	Others	MT	7.00	0.00	0.00	0.00
	Total Imp	MT	68.65	136.53	70.05	87.08
	Market share in Merchant Demand					
	Demand	MT	324.65	444.23	288.52	363.89
	Domestic industry	%	68.07	62.51	66.88	68.92
	Other producers	%	10.78	6.75	8.66	7.15
	Imports from China PR	%	18.99	30.73	24.45	23.93
	Imports from Other countries	%	2.16	0.00	0.00	0.00
	Market share in total demand					
	Demand	MT	453.65	675.23	462.52	456.89
	Domestic industry	%	77.15	75.34	79.34	75.25
	Other producers	%	7.72	4.44	5.41	5.69
	Imports from subject country	%	13.59	20.22	15.16	19.06

	Other Countries	%	2.16	0.00	0.00	0.00
	Productivity					
	Employees	Indexed	100.00	113.33	102.44	103.28
	Productivity per employee	Indexed	100.00	143.33	138.71	115.11
	Return on Investment					
	Trend	Indexed	100	16.14	-8.91	-412.67
	Capacity utilization					
	Capacity	MT	516	725	725	725
	Capacity utilization	%	93.41	99.59	94.48	79.03
	Production	MT	482	722	685	573
	Export price					
	China PR	Rs./Kg	659	563	586	461
	Landed value	Rs./Kg	921	788	799	605
	Inventories					
	Closing stock	Indexed	100	120.05	327.31	150.54
	Opening stock	Indexed	100	51.55	61.89	168.74
	Average stock	Indexed	100	74.85	152.18	162.55
	Wages					
	Wages paid to employees	Indexed	100	108.93	100.92	110.56

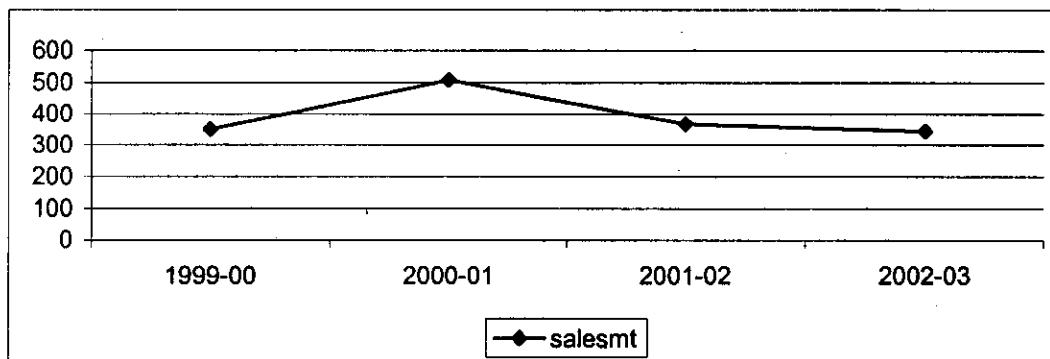
Volume and market share of dumped imports

34. Based on the import statistical information of DGCI&S Kolkata, the imports from China PR has increased both in absolute and relative terms during the POI. The Authority analysed the transaction wise import statistics from DGCI&S and observed that the entire imports are coming from China PR only. Imports from China PR increased in 2000-01, declined thereafter in 2001-02 and again increased in 2002-2003 by 24% from year 1999-2000.

35. The market share of domestic industry in merchant demand remained more or less uniform. However, market share of domestic industry in gross demand declined very marginally over the injury period after an increase in 2001-2002. At the same time, market share of imports from China PR has increased both in merchant as also gross demand from 18.99% in 1999-2000 to 23.93% in the POI and 13.59% in 1999-2000 to 19.06% in the POI respectively. The Authority notes that the market share of the domestic industry is uniform in the merchant demand whereas it has declined by less than 2% which is not significant.

Actual and potential decline in sales

36. Sales of the domestic industry increased in 2000-01, but declined in 2001-2002 and again increased in the POI. Since the domestic industry has significant captive consumption also, sales including captive consumption were also examined. The increase in sales in 2000-01 was largely due to significant increase in Govt. procurement of tablets/formulations. Though the Govt. procurement declined thereafter, the decline in sales of the domestic industry was much more than decline in Govt. procurement.



37. The Authority notes that the sales volume in respect of gross demand has declined during the POI. The Authority notes that due to declining sales volumes, the domestic industry could not increase the production as it would have otherwise lead to increased inventories.

Production & Capacity Utilisation

38. Though the production of Chloroquine Phosphate of the domestic industry has increased by 18.88% during POI in comparison to 1999-00, whereas there has been a decline in the capacity utilisation from 93.41% during 1999-2000 to 79.03% during the POI except the period 2000-2001 when the demand of the subject goods was highest in the injury period. The Authority notes that domestic industry has suffered financial loss in the year 2001-2002 when capacity utilization of the domestic industry was 94.5%.

39. Production of the domestic industry increased in 2000-01, but it declined thereafter. While increase in production in 2000-01 was to some extent due to increase in demand and placement of huge order by NAMP, the decline in production thereafter is far higher than the decline in demand by NAMP. Therefore it can not be said that decline in production was due to decline in demand. In fact, it was found that while the gross demand was almost in the same region between 2001-02 and 2002-03, the production of the domestic industry has declined.

Growth

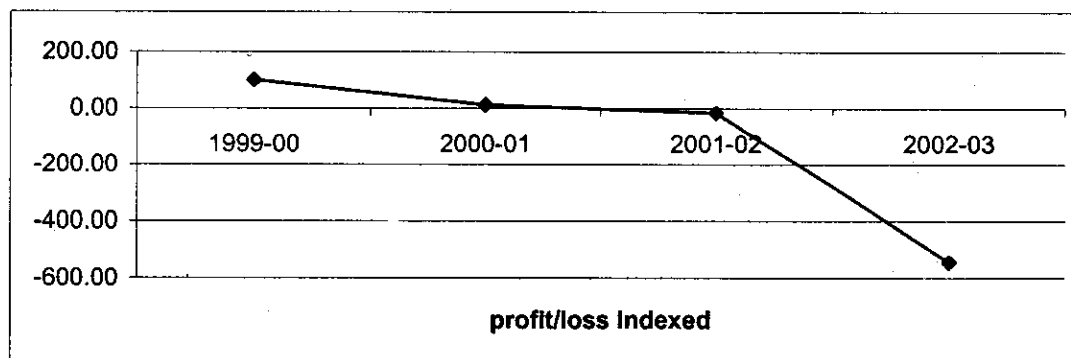
40. The domestic sales volume has increased whereas volume of imports from China PR has increased by 19 % during the same period. The volume of imports has increased much more when the merchant demand of the subject goods is uniform and the market share of domestic industry is also static. Merchant demand has increased from 324.65 MT during 1999-2000 to 363.89 MT during the POI whereas demand including captive consumption has also increased from 453.65 during 1999-2000 456.89 MT during the POI.

Profitability

41. The unit cost of production has declined from 100 in 1999-2000 to 87.40 during the POI whereas unit selling price has declined significantly from 100 in 1999-2000 to 71.36 in the POI. The unit cost of production has not declined in proportion to the unit-selling price, which led to the further increase in financial loss during the POI. The Authority notes that the domestic industry is incurring the loss due to the fact that the domestic industry is forced to reduce the selling price below its cost of production due to dumped imports from subject country. The industry has suffered material injury on account of depressed selling price.

42. The selling price of the domestic industry declined over the injury analysis period much more than the decline in the cost of production of the domestic industry. From a situation of profits in 1999-2000 and 2000-01, the domestic industry started suffering financial losses since 2001-2002, which further aggravated in 2002-03 due to significant decline in the landed value from Rs 799/kg in 2001-2002 to Rs605/Kg during POI of the subject goods.

43. Cost of production of the domestic industry has declined largely due to decline in raw material prices. However, the decline in the selling price is far greater than the decline in the cost of production. Even when the cost of production of the domestic industry was high, the domestic industry was earning profits, whereas the domestic industry suffered financial losses even when the cost of production declined. The trend behavior may be seen from this graph, as to how the profit of the domestic industry has been eroded from a situation of profitability.



Price undercutting

44. The Authority notes that the dumping by the subject country has a significant impact on the net sales realization by the domestic industry on the subject goods. Dumped imports were undercutting the prices of the domestic industry as landed value of imports from the subject country was below the selling price of the domestic industry. Import price from China PR declined very significantly throughout the injury period. The decline between 1999-2000 to POI was about 28%.

45. It was also found that throughout the injury analysis period, the imports from subject country were undercutting the prices of the domestic industry and the undercutting margin was within a range of 5% to 16% during the POI.

Price Underselling

46. The Authority notes that price underselling is an important indicator of assessment of injury; thus, the Authority has worked out a non injurious price and compared the same to the landed value to arrive at the extent of price underselling.

47. The analysis shows a significant level of incidence of price underselling causing injury to the domestic industry. Thus the examination of the available evidence shows that the domestic industry as a whole suffered injury on its sales of subject goods during POI. The Authority has determined the extent of price underselling during the POI and found it to be within a range of 12% to 21% during the POI.

Price depression

48. The authority notes that continued lowering of import prices of the subject goods by China PR forced domestic industry to sell the products at prices much lower than its cost of production. Even at these lower prices the price undercutting was in a range of 5%-16%, had it been selling its goods at higher prices the undercutting would have been more severe and significant. Thus, there is very significant price depression in this case. Imports from China depressed the prices of the domestic industry in the Indian Market. As a consequence, the domestic industry prices declined and as shown in table below:

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Selling Price	973	839	780	644
Decline as compared to base year		13.77	19.84	33.84

The imports were having significant depressing effect on the price of the domestic market, as the domestic industry is not able to raise its selling price in view of the dumped imports.

Factors affecting domestic prices

49. The CIF price of the subject goods from China PR has decreased during the entire injury period. It has decreased by 29% during the POI. The domestic selling price is based on the landed value of the dumped imports and the volume that is coming into the domestic market. The domestic industry has significant price depression along with the price undercutting which have been affecting domestic prices due to the decline in the import price of the subject goods.

Inventory

50. Inventories with the domestic industry have increased in the POI from the base year 1999-2000 even when the domestic industry made an effort to reduce the inventories by curtailing production. The Authority notes that the average inventory stocks have increased from 100(indexed) during 1999-2000 to 162.55 during the POI. The Authority notes that exports have resulted into low level of inventories, otherwise inventories level, considering no increase in exports would have been much higher than present level. The average inventory stock as a percentage of production has increased from 5.67% during 1999-2000 to 7.76% during the POI even after significant export sales otherwise stock position would have been severe.

51. The Authority also notes that because of the significant decline in export price during the POI, the domestic industry reduced its selling price with a view to keep the selling price at a level to compete and to maintain minimum level of stocks.

Return on Investment and ability to raise capital

52. Return on investments has significantly declined during the POI. The domestic industry has been forced to a situation of losses, resulting in negative return on investment from a situation of positive return on investments in 2000-2001. The rate of return on investment during POI for the product under consideration is negative due to loss for the domestic industry. The domestic industry did not raise fresh capital or plan new investment for this product. The Authority notes that the domestic industry is not able to earn the reasonable profit which is resulting into negative return on investments.

Employment

53. Number of employees of the domestic industry has increased in 2000-2001 when demand of the product was the highest thereafter it declined in the subsequent years with the decline in production and sale. The domestic industry reduced number of employee as a cost cutting measure to improve the productivity. The Authority notes that this change in employment level is due to the significant loss to the domestic industry and cost cutting measure to maximize the efficiency and productivity. The Authority, however, notes that this decline in level of employment cannot be ascertained that led to injury to the domestic industry.

Productivity

54. Productivity of the domestic industry, as reflected in terms of production per employee, showed increase between 1999-2000 and 2000-2001. However, productivity declined thereafter upto POI. It was found that the domestic industry utilized its production facilities for production of other products when the plant was not being used for production of Chloroquine Phosphate as a result of dumping. It could not, therefore, be said that the domestic industry suffered some injury due to decline in productivity.

Wages

55. The Wages of the domestic industry show an increase from 100(indexed) to 110.56(indexed) during the entire injury period. However it is found that the decline in profitability is much more than the increase in wages of the domestic industry. Thus, while increase in wages reflects normal wage increases, it can not be ascertained that the increase in wages is the reason for financial losses.

Cash Flow

56. Both the petitioner companies are the multi product companies and they do not maintain records of cash profits separately for the product under consideration. Therefore the Authority could not decisively determine cash flow pertaining to the product under consideration. The Authority notes that the injury on account of this factor cannot be established.

Magnitude of Dumping Margin

57. The magnitude of dumping margin from China PR is significant, as examined and worked out in the heading under assessment of dumping determination.

G. Causal Link

58. The authority has examined the submissions made by interested parties in respect of the issue of causal link. Subsequent to the preliminary findings, a detailed examination was made by the Authority with regards to the issues pertaining to the material injury to the domestic industry and causal link between the material injury to the domestic industry and dumped imports. Paragraph (v) of Annexure II of the Anti-dumping Rules reads as under:

" It must be demonstrated that the dumped imports are, through the effects of dumping, as set forth in paragraphs (ii) and (iv) above, causing injury to the domestic industry. The demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry shall be based on an examination of relevant evidence before the designated authority. The designated authority shall also examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry,

and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry."

59. The Authority notes that market share of the domestic industry was uniform in the merchant demand but it decreased in the period of investigation by 2% in the gross demand which is not significant. In examining the price effect whether the dumped imports have significantly undercut the price of the like product in India, the Authority notes that the landed value of the subject goods from the subject country was lower than the net selling price of the domestic industry thereby undercuts the selling price of the domestic industry. Moreover, undercutting to the domestic prices does not show the full impact of the dumped imports since the domestic prices are depressed. This undercutting along with price depression in effect is eroding the profitability of the domestic industry. The landed value of dumped imports was below the domestic selling price throughout the injury period and exerted pressure on the domestic industry to decrease the price even when the domestic industry is suffering losses. The Authority notes that the price factor of the dumped imports is the cause of injury to the domestic industry

60. The Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation in the Industry;

61. The exports of subject goods have increased in proportion to the production of the subject good. The growth in exports is higher than the increase in production and domestic industry is able to maintain its production due to increase in exports other wise production in period of investigation would have declined much more if the domestic industry would not have exported. Moreover exports have resulted into lower inventories levels. Hence, the Authority notes that exports have not caused any injury to the domestic industry.

62. Chloroquine Phosphate is primarily used as drug for Malaria. One of the petitioner companies M/s. Ipca Labs is involved in production of formulations also for which the company is using Chloroquine Phosphate produced captive. The Authority notes that there is decline in captive consumption of the company during the POI. NAMP (National Anti Malaria Programme) regularly floats tenders for procurement of Chloroquine Phosphate Tablets. It would be seen that IPCA has been able to get order from NAMP only in 2000-01. This has resulted into decline in production of formulation by IPCA after 2000-2001 followed by decline in captive consumption also. This decline in captive consumption has resulted into increase in domestic sales of the company. The Authority notes that decline in captive consumption is not a cause of injury to the domestic industry.

63. It is noticed that plant utilization on account of one of the petitioner company has been low during the POI. In normal circumstances, lower plant utilization should result into higher allocation of fixed cost. This issue was examined during the course of verification. However, in case of low production, company has option of either to produce other chemicals in same plant or to keep the plant as idle. In this case the company has used the plant to produce other chemicals, which resulted into higher utilization of the plant. The company has allocated its fixed overheads of the plant to Chloroquine Phosphate and other products produced in same plant based on equivalent production quantity. Thus in case of production of Chloroquine Phosphate, comparative lower plant utilization has not shown any significant effect on its cost. Therefore, the Authority notes that lower capacity utilization in case of subject goods have not resulted into higher allocation of fixed cost and injury (self inflicted) has not been caused on this account.

64. Merchant demand has increased from 324.65 MT during 1999-2000 to 363.89 MT during the POI whereas demand including captive consumption has also increased from 453.65 during 1999-2000 456.89 MT during the POI. There is no contraction of demand of the subject goods which could have contributed to any injury to the domestic industry.

65. The entire imports are coming from China PR only. Hence imports from other countries had no volume effect or price effect on the domestic industry. There is no other factor such as trade restrictive practice or development in technology which could have caused material injury to the domestic industry.

66. The known factors other than dumped imports, which could at the same time, have injured the domestic industry, were examined to ensure that the possible injury caused by these factors was not attributed to the dumped imports. The authority also examined the effects of other known factors of the domestic industry and notes that the material injury suffered by the domestic industry is not due to the other known factors.

F. Conclusions on Injury:-

67. From the foregoing, the following conclusions are made by the Authority regarding injury suffered by the domestic industry.

- a) Imports from the subject country have increased in absolute terms.
- b) Imports are significantly undercutting the selling price of domestic industry
- c) The profitability of the domestic industry has been severely eroded resulting into financial loss.

- d) The imports were having significant depressing effect on the price of the domestic market as the domestic industry is not able to raise its selling price in view of the dumped imports.
- e) The domestic industry is suffering from price underselling as landed value of the subject goods are below the non injurious price of the domestic industry.
- f) The domestic industry has suffered material injury.

H. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

68. The Authority holds that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition.

69. The Authority also recognizes that though the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products, however, fair competition in the Indian market will not be reduced by these anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by the dumping practices and would prevent the decline of the domestic industry and would help in maintaining availability of wider choice of the subject goods to the consumers.

I. LANDED VALUE

70. The landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under Customs Tariff Act, 1962 and applicable level of custom duties except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

J. CONCLUSIONS:

71. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- a) Subject goods in all forms originating in or exported from China PR have been exported to India below its normal value.
- b) The domestic industry has suffered material injury.
- c) The injury has been caused to the domestic industry by dumping of the subject goods originating in or exported from the subject country.
- d) The Authority thus considers necessary to recommend anti-dumping duty on imports of subject goods falling under Chapter 29 originating in or exported from the subject country.

72. Accordingly the Authority recommends the definitive anti dumping duty be imposed on all imports of Chloroquine Phosphate originating in/or exported from China PR. The anti dumping duty shall be the difference between amount mentioned in Col. 9 of the following table and the landed value of imports/Kg. to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on all the imports of Chloroquine Phosphate falling under Chapter 29, Custom Sub-heading 293921 of the Customs tariff originating in or exported from the country mentioned below:-

Sl. No (1)	Sub-heading (2)	Description of goods (3)	Specification (4)	Country of origin (5)	Country of Export (6)	Producer (7)	Exporter (8)	Amount (9)	Unit of Measurement (10)	Currency (11)
1.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	China PR	China PR	Any producer	Any exporter	15.04	Kg.	US\$
2.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	China PR	Any country other than China PR	Any producer	Any exporter	15.04	Kg.	US\$
3.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	Any country other than China PR	China PR	Any producer	Any exporter	15.04	Kg.	US\$

73. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

74. Subject to the above, the Authority confirms the Preliminary Findings dated 6th November 2003.

75. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff Rules, 1995.

ABHIJIT SENGUPTA, Addl. Secy. & Designated Authority